आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर. / 2000 / 2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र. / भोपाल / 44 / 2021–23
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" मार्च 2022

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 48
मूल्य : 20 / –

स्थापना – माघ / शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

वर्ष –23 | अंक–03 | फाल्गुन / चैत्र मास | मार्च 2022

होली विशेषांक

सुरों के सरताज

सुरेश चन्द्र जी
होलीपुरा

प्यारेलाल जी
फिरोजाबाद

चौधरी अनन्त राम जी
होलीपुरा

तोषनिधि जी
फरौली

विनय जी सोती
मैनपुरी

मुनीन्द्र नाथ जी
होलीपुरा

बंसीधर जी
गोंदिया

खरगजीत जी
होलीपुरा

अवधेश जी
होलीपुरा

टीकाराम जी
मैनपुरी

धीरेन्द्र जी
मैनपुरी

थान सिंह जी
तालगांव

श्री त्रिभुवन दास जी
(मुनमुनिया)

प्रभुदयाल जी
ग्वालियर

कृष्ण गोपाल, मनुजी
लखनऊ

पृथ्वीनाथ जी
मुंबई

सौरभ जी
गाजियाबाद

रजनीकांज जी
भोपाल

दिनेश चन्द्र जी
लखनऊ

मेवाराम जी
ग्वालियर

विजय जी
लखनऊ

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुख-पत्र

अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि

अमित मिश्रा

(**जुलाई** 1984 - **जनवरी** 2022)

मान लिया हमनें

मृत्यु ही है जीवन का सार

किन्तु बहुत भारी है

बड़ों के कंधो पर

छोटे के चले जाने का भार

अपार दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि स्व. श्री कुमुद नाथ मिश्रा जी (काशी भवन जयपुर / मुरादाबाद) के सुपुत्र अमित मिश्रा का स्वर्गवास अल्पायु में दिनांक 10/01/2022 को हमारे निवास स्थान ग्रेटर नोएडा में हो गया है |

शोक संतप्त

श्रीमती इंदु मिश्रा (माता)

आशीष - स्वाति, अनुज - निहारिका (भाई- भाभियाँ)

युवान, निहान, रोनित (भतीजे) एवं समस्त मिश्रा एवं चतुर्वेदी परिवार

फोन नंबर : 9873183165/ 9867190476

(र.क्र. 2022/891)

समाज में होली
गायन के सितारे

राकेश जी
रिषड़ा

हेमंत जी
बेंगलोर

किशोर जी
लखनऊ

प्रभंजय जी
भिलाई

देवेश जी
लखनऊ

तन्मय जी
लखनऊ

तीरथ नाथ जी
कोलकाता

अनुपम जी
मैनपुरी

गोकर्ण नाथ जी
रिषड़ा

अशोक जी
फरिदाबाद

माधुरी मोहन जी
ग्वालियर

पीयूष जी
कोलकाता

सौरभ जी
लखनऊ

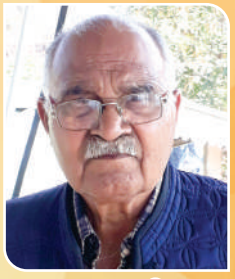
भरत जी
भोपाल

ज्ञानीश जी
हैदराबाद

धर्मेश जी
गाजियाबाद

लोकेन्द्र जी
गाजियाबाद

सुबोध जी
लखनऊ

Nirmala Construction
COMPANY

निर्मला कंस्ट्रक्शन कंपनी
गवर्नमेंट रजिस्टर्ड् कांट्रैक्टर

Akshay Choubey

Proprieter

B.E. (Civil Engineering) – Priyadarshini College, Nagpur
M.Tech - Birla Institute of Technology, Mesra (Ranchi)

Bazariya Ward No.1, Jawalamai
Chouraha, Damoh(M.P.) -470661

+91 8770955872
+91 8602266219

- **किसी भी प्रकार की बिल्डिंग, घर, मॉल, कॉम्प्लेक्स, कालोनी के कंस्ट्रक्शन के लिए सेवा का अवसर प्रदान करे। तथा, कंस्ट्रक्शन मशीनर, जेसीबी, फियोरी, पोकलेन, के लिए संपर्क करे!**
- **हमेशा स्नेह और सहयोग देने के लिए माननीय सतीश चतुर्वेदी और आभा चतुर्वेदी (नागपुर) को विशेष धन्यवाद !**

दमोह परिवार - स्व. कैलाश नाथ चौबे(बगियावाले) , पुत्र - विनोद, देवेंद्र, गजेंद्र, राजेंद्र,स्व. नीरज चौबे।

भाई - तनय, सार्थक, विभोर, सुयोग, यश चौबे।

(र.क्र. 2022/851) 2/6

Bharatgas
Bharat Petroleum
COOK FOOD. SERVE LOVE.

100 YEARS

धर्मनिष्ठ सेवा का यह शताब्दी पर्व
चतुर्वेदी समाज की अस्मिता पर गर्व।

एक दिव्य प्रकाश का
दिव्य हाथों से हुआ पदार्पण।
ज्योत से ज्योत सजी, सज
गया चतुर्वेदी समाज का प्रांगण।
हम 'रेखा गॅस' परिवार
के सदस्य करते आपको वंदन।
'चतुर्वेदी चन्द्रिका' की नींव
रखने वालो को हमारा
शत शत अभिनंदन!

शुभेच्छुक : दिलीप चौबे व परिवार

चतुर्वेदी चन्द्रिका

(शताब्दी वर्ष १९२२-२०२२)

समस्त चतुर्वेदी समाज को बांधे
रखने वाली यह 'रेखा' चिरायु हो।

रेखा गॅस एजन्सी

द. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन : (0257) 2221095,
2221195, 2225195, 2228495.
E-mail : rekhagas20032003@rediffmail.com

www.malhar.org

(२.क्र. 2022/915)

With Best Compliments From :

25 YEARS

IN SHELLAC R&D

NATURAL PRODUCT MANUFACTURERS

Manufacturer & Exporters

Lakh Dana

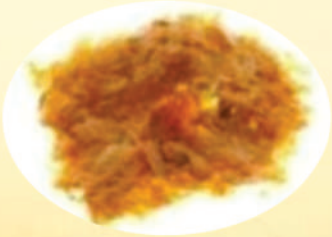

Machine Made Chapda

Aleuritic Acid

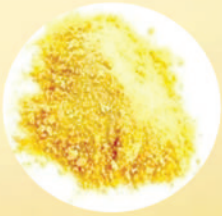

Bleach Shellac (Dewaxed)

SUMIT KUMAR GHOSH
SAPTARSHI GHOSH

Mob. : +91 9830-16-5126

E-mail ID : npm.office1@gmail.com

Works - Badu Road, Madhyamgram, P.O. Abdalpur, Kolkata - 700155 West Bengal, India

Admn. Office - AJ-65, Sector - II, Salt Lake, Kolkata - 700091, West Bengal, India

Branch - DGK-602, DLF Galleria, New Town, Rajarhat, Kolkata-700156 West Bengal, India

(र.क्र. 2022/914)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	8
संपादकीय	9
कार्यकारिणी बैठक (ऑनलाइन)	11
होली	14
मोसे न खेलों होरी	17
होली	19
फाग उत्सव	21
होली : पारम्परिक त्यौहार	24
होली गायन - परंपरागत रसिया	27
होली की मस्ती विजिया की तरंग	29
होली के रंग, मैनपुरी के संग	31
रामायण - होलीकाण्ड	34
भक्त और भक्ति	36
रंगों का सर्वहारा त्यौहारा - होली	37
भारत के महान संत - श्री राम कृष्ण परमहंस	38
शाखा समाचार	39
समाज समाचार	40
शोक समाचार	42

अंक 03
मार्च 2022, वर्ष - 23

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN0283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

आज सदा शिव खेलत होली।।
जटा जूट में गंग विराजति, अंग विभूति रमौरी
वाहन बैल लाद चंद्रमा, मृगछाला उर ओरी,
नाग गल सौं लपिटौं री।
अद्भुत रूप उमा लखि धाई, संग लिये सखियाँ करोरी।
हँसि मुस्काति लजात चंद्रमा ठाड़ी करति बरजोरी,
मलति हर के मुख रोरी।।
गणन संग गणपति उठि धाये, लै गुलाल ले भरि झोरी।
लै पिचकारी षडमुख डोले, घूमी घूमी चहुँ औरि,
रंग कौ मेह बरसौं री।।

बंधुवर पालागन,

बसंत ऋतु का आरंभ हो चुका है। इस वर्ष पड़ी भीषण ठंड से समाज के सभी अब राहत महसूस कर रहे हैं। इसी के साथ सर्दी, खाँसी आदि का प्रकोप समाप्त हो चुका है। कोरोना का काल भी अपने अंतिम पड़ाव पर पहुंच चुका है। जिससे समाज ने एक राहत की सांस ली है। विगत वर्ष इसका प्रकोप झेल चुके लोग लोगों के मन में आज भी उसका भय व्याप्त है। इन सबके बाबजूद होली की मस्ती, उमंग हर्षोउल्लास का माहौल तैयार हो रहा है।

6 फरवरी को महासभा कार्यकारिणी की ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई जिसमें भविष्य संबंधी योजनाओं पर सार्थक चर्चा हुई एवं यह खुशी की बात है कि आप सभी के सहयोग से कोरोना के कठिन समय में भी हम अपनी समाज हित की अन्नपूर्णा योजना को निरंतर चलाने में सफल रहे। इस महामारी के विपत्ति काल में हम अपने स्वजनों का सहयोग कर सके। कार्यकारिणी बैठक में महासभा संरक्षक डॉ. सतीश जी (नागपुर) ने अपने विवाह की वर्षगांठ के अवसर पर अन्नपूर्णा सहायतार्थ 1,00,000/- रुपये, भाई ज्ञानेंद्र जी (नागपुर) ने अपनी जीवन संगिनी के जन्मदिन के अवसर पर 12000/- रुपये व मैंने अपने विवाह की वर्षगाँठ पर 12,000/-रुपये अन्नपूर्णा सहायतार्थ प्रदान किये। जिससे अन्नपूर्णा कोष की वर्ष 2021-22 की आर्थिक कमी का निवारण हो गया। बैठक में आपस में मिलने की तीव्र अभिलाषा देखी गई जिसको देखते हुए वह करो ना कॉल की समाप्ति के चलते शीघ्र ही बैठक आयोजित किए जाने पर चर्चा हुई जिस पर जल्द ही निर्णय लिया जाएगा बैठक का विस्तृत ब्यौरा इस पत्रिका में प्रस्तुत किया जा रहा है।

महासभा के शताब्दी इतिहास की पुस्तक भाई भरत जी के प्रयासों से पूर्ण होकर प्रकाशन हेतु तैयार है। हमारे समाज के समाजसेवी व समाज सहयोगी बंधुओं के सहयोग से पत्रिका के प्रकाशन हेतु विज्ञापन प्राप्त हो रहे हैं। जिनको एकत्र कर महासभा इतिहास पुस्तक शीघ्र प्रकाशन कर आपके सम्मुख प्रस्तुत किया जाएगा।

बच्चे अपनी पढ़ाई के साथ परीक्षा की तैयारियों में व्यस्त है। आगामी परीक्षाओं हेतु उनको मेरी शुभकामनाएं और आशीर्वाद। उनको अपने स्वास्थ्य का भी आवश्यक रूप से ख्याल रखना होगा। इसके लिए डॉ. से परामर्श में झिझके या डरें नहीं। नियमित व्यायाम, निश्चित समय तक खेल कूद भी स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

संपादकीय

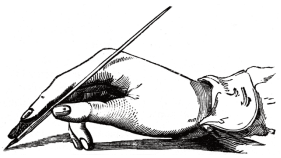

फागुन माह के आगमन के साथ ही चंहु ओर प्रकृति की रंगीन छटा देखने को मिलती है। हर ओर रंगीन व रूमानियत का मौसम हल्की सी ठंडक वह चारों और उत्साह उमंग और मस्ती का आलम होता है। किसान अपनी फसल के आगमन से खुश होता है। प्रकृति में पतझड़ के उपरांत नए पत्तों के आगमन के साथ नई ऊर्जा का संचार होता है। कड़ाके की सर्दी के उपरांत मानव जाति को संपूर्ण समाज भी एक राहत की सांस ले रहा होता है। इसी के बीच फागुन में होली का त्यौहार भगवान श्री कृष्ण के सानिध्य का भरपूर एहसास कराता है। ब्रज में चारों ओर होली है, होली है के स्वर सुनाई देते हैं। इसके साथ होली गायन

जैसे :* मथुरा की कुंज गली में,

* मोहन रंग मत डारो, * मृगनयनी तेरो यार नवल रसिया, * जमुना तट श्याम खेले, * रसिया को नारी बनाओ री, * आज बिरज में होली रे रसिया, * कपोलन कौन दियो रे गुलाल आदि होलियों के अनेक सुरमधुर गायन के स्वर कानों में गुंजित होते हैं। इसके साथ ये स्वर एक जोश उमंग और उत्साह का संचार करते हैं।

*यशोदा नंद को हमें तो जोगनिया बनाए गयो री। आप तो ओढ़ें शाल दुशाला, हमें तो कमरिया उढ़ाईं गयौ री। आप तो खावे माखन मिश्री, हमें तो उपवासा कराय गयो री। आप तो जाएं द्वारका छाये, हमें तो गोकुल में बसाई गयौ री।

इस वर्ष हम होली के पावन अवसर पर समाज की होली गायन-वादन की धरोहर को सहेजने वाले हमारे होली गायन-वादन के क्षेत्र में पारंगत समाज के दिवंगत बाँधवों रूपी ₹ध्रुव तारों₹ को याद कर रहे हैं। इसी परंपरा में सुरेश चंद जी (होलीपुरा), अवधेश जी(होलीपुरा), त्रिभुवन दास जी, मुनमुनिया (मैनपुरी), खरगजीत जी(होलीपुरा), टीकाराम जी (मैनपुरी), चौधरी अनंत राम जी (होलीपुरा), थान सिंह जी (तालगांव), प्यारे लाल जी (फिरोजाबाद), मुनींद्र नाथ जी (होलीपुरा), युवा प्रेरणा सौरभ जी (गाजियाबाद), तोषनिधि जी (फ़रौली), धीरेन्द्र जी (मैनपुरी) विनय सोती जी (मैनपुरी), पृथ्वी नाथ जी (मुंबई), कृष्ण गोपाल जी,मनु (लखनऊ), दिनेश चंद जी (लखनऊ), विजय जी (लखनऊ), रजनीकांत जी (भोपाल) बंशीधर जी (गोंदिया) मेवाराम जी (ग्वालियर) प्रभु दयाल जी (ग्वालियर)।

हमारे समाज की इस होली गायन वादन की वैभवशाली व पुरातन परंपरा को आज भी समाज के अनेक बंधुओं ने जीवित रखा हुआ है। जिनमें सर्वश्री हेमंत जी (बेंगलुरु), किशोर जी(लखनऊ), प्रभंजय जी (भिलाई), देवेश जी (लखनऊ), तन्मय जी (लखनऊ), धर्मेश जी (गाजियाबाद), तीरथ जी (कोलकाता) गोकर्ण जी (रिषड़ा), सुबोध जी (लखनऊ), भरत जी (भोपाल), अनुपम जी (मैनपुरी), ज्ञानीश जी (हैदराबाद), पीयूष जी (कोलकाता), लोकेंद्र जी (गाजियाबाद) माधुरी मोहन जी (ग्वालियर), अशोक जी (फरीदाबाद), सौरभ जी (लखनऊ) के नाम उल्लेखनीय है। हमारा प्रयास होगा कि भविष्य में भी हम इस तरह के कलाकारों व प्रतिभाओं को समाज के सामने रख सके। यह हमारा प्रथम प्रयास है हो सकता है इसमें हमसे कुछ त्रुटि हुई हो या किसी का जानकारी छूट गई हो जिसे हम भविष्य में जरूर पूरा करने का प्रयास करेंगे इस कार्य में हमारे सभापति जी का मार्गदर्शन भाई भरत जी का सहयोग एक आवश्यक अंग था इसी के साथ भाई दिलीप जी (लखनऊ) लोकेंद्र जी (गाजियाबाद), नीरज जी (मैनपुरी) अभिषेक जी (ग्वालियर), विशाल जी (पुरा) का भरपूर सहयोग मिला।आप सभी का बहुत-बहुत आभार।

पत्रिका के इस अंक में हम विगत 6 फरवरी 2022 को आयोजित महासभा की कार्यकारिणी की बैठक की विस्तृत जानकारी दे रहे हैं। इसी के साथ चित्रा जी (भोपाल) व अम्बर जी (भोपाल) की होली, दिलीप जी (लखनऊ) का मोसे न खेलों होरी, भरत जी (भोपाल) की फाग उत्सव पर जानकारी, लोकेन्द्र जी (गाज़ियाबाद), ऊषा जी (भोपाल), कैलाश जी (कासगंज) के होली के रंगों से भरपूर आलेख व हरस्वरूप जी (मैनपुरी),भरत जी (रिषड़ा) के गुदगुदाते व होली की मस्ती से भरपूर आलेख आपको अवश्य पसंद आएंगे। आपकी प्रतिक्रिया का हमें इंतज़ार रहेगा। आपके शब्द हमारे लेखकों का उत्साह वर्धन करते हैं। उत्साह पूर्ण,जीवन की खुशियों से भरपूर गुजियों की होली की हार्दिक शुभकामनाएं व सादर पालागन

- शशांक चतुर्वेदी

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी(भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्रनाथ चतुर्वेदी "रज्जन" (कोलकाता) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा)

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

उप सभापति : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी,(भोपाल), श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री अखिलेश चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर)
मंत्री : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)
संयुक्त मंत्री : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)
कोषाध्यक्ष : श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका – श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल) **ऑडिटर – शिव एसोसिएट,** नई दिल्ली

माननीय कार्यकारिणी सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (हिंडौन), श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी(बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे(भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी "लालन" (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे(गोंदिया), श्री आलोक चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी (ग़ाज़ियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फ़रीदाबाद)।

स्थाई आमंत्रित सदस्य : श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी "अन्नी" (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकात्ता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी "पुत्तन" (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेड़ा), श्री राजेश चतुर्वेदी, "गुड्डू" (कोलकत्ता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, "मोहित" (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह), मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली)।

महिला प्रकोष्ठ : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दौसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा)।

युवा प्रकोष्ठ : डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा)।

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)
आई टी प्रकोष्ठ : श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

पता : 405-406, चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110049

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
कार्यकारिणी बैठक (ऑनलाइन)
6 फरवरी 2022

माँ सरस्वती के आशीर्वाद से बसंत पंचमी तिथि के पावन पर्व पर श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक दिनाँक 6 फरवरी 2022 को ऑनलाइन आहूत की गई। बैठक का आरंभ ज्ञानेंद्र जी गाजियाबाद के मंगलाचरण पाठ से हुआ।

तत्पश्चात सभापति डॉ. प्रदीप जी की अनुमति से बैठक की कार्रवाई प्रारंभ करते हुए मंत्री मुनींद्र नाथ जी ने विगत बैठक की कार्यवृत्त को सदन के पटल पर रखा। जिसे सर्वसम्मति से यथास्वरूप पारित कर दिया गया।

बैठक के कार्यवृत्त के अनुसार चर्चा को प्रारंभ करते हुए मंत्री मुनीन्द्र नाथ जी ने बताया कि विगत समय में कार्यकारिणी बैठक के लिए कोटा, जयपुर, गोंदिया, जहांगीरपुर, कानपुर, चंडीगढ़ से प्रस्ताव आए थे। परंतु कोरोना काल के कारण बैठक करना संभव नहीं हो सका। इस पर मनीष जी (कोटा) ने कोटा में बैठक आयोजित करने का प्रस्ताव रखते हुए कहा कि एक दुखद घटना के कारण पूर्व में कोटा बैठक को स्थगित करना पड़ा था। अतः मैं कोटा में कार्यकारिणी की बैठक आयोजित किए जाने का प्रस्ताव रखता हूँ। जिसे सभापति जी ने स्वीकार कर शीघ्र ही समय व तिथि निश्चित कर जानकारी देने की बात कही।

सभापति डॉ. प्रदीप जी ने कहा कि इस वर्ष के कैलेंडर के प्रकाशन में भुवनेश जी के सहयोग का मैं बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूँ। इस वर्ष कैलेंडर का वितरण जनवरी के प्रथम सप्ताह में कर दिया गया था। इस प्रोजेक्ट को सफल करने के लिए महेश जी, ज्ञानेंद्रजी व समस्त कार्यकारिणी सदस्यों का बहुत-बहुत आभार। इसके आगे सभापति डॉ. प्रदीप जी ने कहा कि इस कार्यक्रम की सफलता के लिए बधाई व समय पर प्रकाशन करने का हमारा प्रयास रहा है। इस पर अभयराज जी (गुरुग्राम) ने कहा कि पत्रिका में कैलेंडर का प्रकाशन किया जाना चाहिए। जिससे पत्रिका को ज्यादा अतिरिक्त आर्थिक खर्च बोझ नहीं पड़ेगा। इसकी व्यापकता व उपलब्धता समाज के अधिकतर सदस्यों तक होगी। इस चर्चा में मनोज जी (बंगलौर), प्रदीप जी (आगरा), शशांक जी (भोपाल), आशीष जी (आगरा) ने ऑनलाइन बुकिंग, उपलब्धता सूचना व जानकारी में देरी तथा सूचना के अभाव की बात उठाई। प्रवेश जी (कानपुर) ने कैलेंडर के प्रकाशन में देरी पर

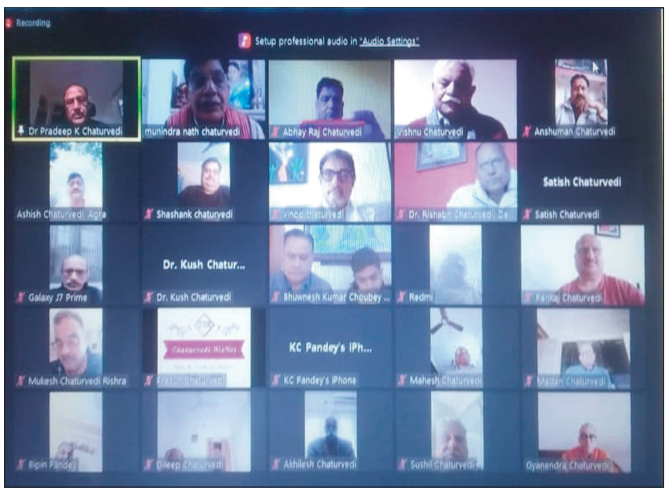

दुख प्रकट किया। प्रसून जी ने इसके थीम व स्वरूप निर्धारित करने के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित करने का प्रस्ताव किया। प्रवेश जी (कानपुर) ने टेबल कैलेंडर बनाए जाने का प्रस्ताव रखा। संजय जी (कानपुर) ने कैलेंडर वितरण में शाखा सभा की भागीदारी की बात रखी। शशांक जी (संपादक, चतुर्वेदी चंद्रिका) ने कहा कि महासभा के कैलेंडर को अन्नपूर्णा हितग्राहियों को निशुल्क वितरित किया जाए। जिससे उनके मन में महासभा के साथ एक भावनात्मक जुड़ाव होगा। महासभा चाहे तो हम इसे प्रायोजित करने या करवाने को भी तैयार है। भदावर के ग्रामों में भुवनेश जी (गोंदिया) द्वारा निशुल्क कैलेंडर वितरित कर एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस चर्चा में पंकज जी (मुंबई) व अंशुमान जी (जयपुर) में अपने विचार रखे।

बैठक की चर्चा को आगे बढ़ाते हुए भाई भरत जी (रिषड़ा) ने बताया कि महासभा के शताब्दी इतिहास का लेखन कार्य पूर्ण हो चुका है। इसमें चतुर्वेदी चंद्रिका के पेज साइज के अनुसार 225 पेज की किताब तैयार हो चुकी है। अतः अब इसके प्रकाशन के लिए आप सभी के आर्थिक सहयोग की आवश्यकता है। जिससे महासभा पर कोई अतिरिक्त भार ना पड़े। आप लोग अपने स्वजनों की स्मृति व व्यावसायिक विज्ञापन देकर इसमें सहयोग कर सकते हैं। इस पर कुश जी (इटावा) ने कहा कि इतिहास के 225 पेज की पूर्णता पर बहुत-बहुत बधाई। भरत जी ने अपने भागीरथी प्रयास

से इसे संपूर्ण किया है। इसमें उनका भरपूर सहयोग शशांक जी ने किया है। इसके लिए आप दोनों प्रशंसा के पात्र हैं। इस पर सभापति डॉ. प्रदीप जी ने कहा कि भाई भरत जी व शशांक जी के साथ कुश जी ने भी यथासंभव सहयोग किया है। इसके लिए आप सभी प्रशंसा के पात्र है।

इसके बाद सभापति डॉ. प्रदीप जी ने शताब्दी इतिहास पुस्तक के प्रकाशन के लिए कार्यकारिणी सदस्यों से विज्ञापन का अनुरोध

करते हुए सबसे पहले अपना विज्ञापन देने की घोषणा की। इसके बाद पंकज जी (मुंबई), भुवनेश जी (गोंदिया), अंशुमान जी (जयपुर), विनोद जी (मुंबई), राहुल जी (मुंबई), महेश जी (दिल्ली), संजय जी (मुंबई), शैलेंद्र जी (फरीदाबाद), बीना मिश्रा जी (हैदराबाद) ने अपने व अपनों के विज्ञापन देने की घोषणा की। इसमें शशांक जी ने यह जानकारी भी दी गई कि दिलीप जी (लखनऊ) के सहयोग से अंतिम कवर पेज के लिए प्रकाश जी (जकार्ता, इंडोनेशिया) का विज्ञापन हमें पूर्व में ही प्राप्त हो चुका है। अन्नपूर्णा योजना पर चर्चा के दौरान मंत्री मुनींद्र नाथ जी ने बताया कि अभी हम लोग समाज के 40 परिवारों को अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत सहायता प्रदान कर रहे हैं, जो कि त्रैमासिक स्तर पर दी जाती है। जिसका कुल व्यय 8,65,000/- होता है एवं 5 फरवरी तक हम लोग के पास 8,42,078 संग्रहित हो चुके हैं। इस पर सभापति डॉ. प्रदीप जी ने कहा कि विगत 2 वर्षों से करोना काल के कारण कार्यकारिणी की कोई बैठक नहीं हो सकी है। जिसके कारण हम सभी का मीटिंग में आने जाने व अन्य खर्चों में बचत हुई है। अतः मैं आपसे अपील करता हूँ, कि इस बचत का कुछ हिस्सा अन्नपूर्णा में दान दें। मैं अपनी वह वैवाहिक वर्षगांठ के अवसर पर 12000/- देता हूँ। ज्ञानेंद्र जी (नागपुर) ने अपनी पत्नी प्रीति जी के जन्मदिन के अवसर पर 12000/- प्रदान किए। तत्पश्चात संरक्षक डॉ सतीश जी ने अपनी वैवाहिक वर्षगांठ वसंत पंचमी के अवसर पर 1,00,000 रुपये व अजय चौबे जी (भोपाल) ने भी अन्नपूर्णा योजना में 12000/- देने की घोषणा की।

सभापति डॉ. प्रदीप जी ने बताया कि गुल्लक योजना में अभी तक 75,625/- की राशि एकत्र की जा चुकी है। सभापति डॉ. प्रदीप जी ने बताया कि अन्नपूर्णा योजना के तहत मकर संक्रांति के अवसर पर हैदराबाद सभा द्वारा एक नया अनुकरणीय प्रयास किया। जिसमें उन्होंने मकर संक्रांति के अवसर पर दिए जाने वाले दान/ सहयोग राशि 70,001/- रुपये सामूहिक रूप से हैदराबाद सभा के अंतर्गत महासभा सहायतार्थ प्रदान की। इसके साथ बीना मिश्रा जी अपने परिवार की ओर से 7400/- रुपये व कीर्ति मिश्रा के द्वारा कंपिल परिवार की ओर से 11000/- रुपये की राशि अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ प्रदान किये। जिसकी विस्तृत जानकारी चतुर्वेदी चंद्रिका के फरवरी 2022 अंक में प्रकाशित की गई है।

महासभा की ऑनलाइन वेबसाइट व एप्प के बारे में जानकारी देते हुए ज्ञानेंद्र जी (गाजियाबाद) ने बताया कि इस वेबसाइट के अंतर्गत अनेक कार्य योजना बनाई थी। जिसमें सर्वप्रथम हमारे बंधुओं को दूसरे अनजान शहर में आवास की यथोचित व्यवस्था भोजन के साथ (सशुल्क या निशुल्क), चिकित्सा परामर्श, जनगणना, व्यवसाय में सहयोग, महासभा व पत्रिका की सहायता, विवादों में मध्यस्थता आदि के लिए प्रयास करना। दुर्भाग्यवश व परिस्थितिवश इन कार्यों को रोकना व बंद करना पड़ा। इस पर ललित जी लखनऊ ने वेबसाइट पर महासभा की योजनाओं व पत्रिका की सदस्यता सूची के अंतिम अपडेट की जानकारी देखी है। जिसमें अनेक दिवंगत बाँधवों के नाम अभी भी जुड़े हुए हैं। चर्चा को आगे बढ़ाते हुए अभय राज जी (गुरुग्राम) ने बताया कि कार्यकारिणी की बैठक में सभी की सहमति के उपरांत कॉल सेंटर की शुरुआत की गई थी। इसको प्रारंभ करने से पूर्व इसमें कार्यकारिणी ने सहमति दी थी।

संपादक शशांक जी ने बताया कि कोरोना की दूसरी लहर में

हमने अपने अनेक स्वजनों को खोया है। जिनकी जानकारी एकत्र करने में थोड़ा समय लग गया। इसमें जानकारी एकत्र करने में अभयराज जी (गुड़गांव), लोकेंद्र जी (गाजियाबाद), प्रदीप जी (गाज़ियाबाद), शिव जी (कोटा), आशुतोष जी (कानपुर), दिलीप सिकंदरपुरिया जी (लखनऊ), आशीष जी (आगरा) ने यथासंभव सहयोग दिया तथा हम लोग इस जानकारी को अपडेट करने में सफल भी हुए। यदि आपके पास कोई और जानकारी हो तो मुझसे साझा कर समाजहित में वर्तमान सूची को अपडेट कराने की कृपा करें। पत्रिका की सूची हर माह की 10 तारीख को संशोधित की जाती है। उसके बाद प्राप्त सूचना को आगामी माह में संशोधित किया जाता है। इस चर्चा में पंकज जी (मुंबई) ने कहा कि हम कार्यकारिणी सदस्यों का भी दायित्व बनता है कि हम अपने दिवंगत बाँधवों की सूचना उपयुक्त स्थान तक पहुंचाने में सहायक हो। हम अपने परिजनों व दिवंगत सज्जनों की सूचना आवश्यक रूप से पत्रिका कार्यालय तक पहुंचाने में सहयोग करें। इस पर अंशुमान जी (जयपुर), आशुतोष जी (कानपुर) विनोद जी (मुंबई) ने भी अपने विचारों से सदन को अवगत कराया।

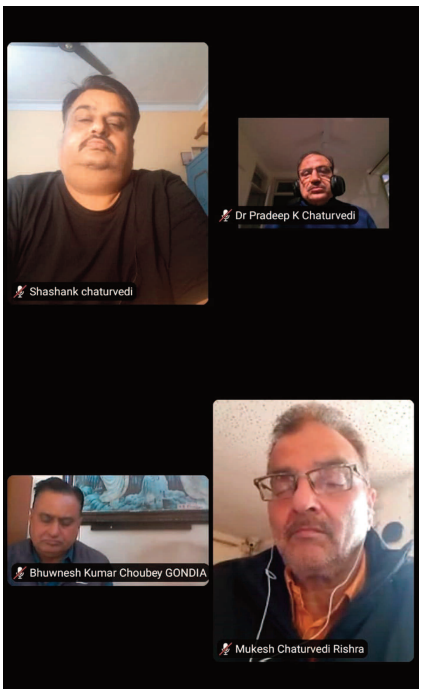

महासभा की आईटी प्रकोष्ठ की ओर से प्रसून जी (भुवनेश्वर) द्वारा चतुर्वेदी बिजनेस नेटवर्क की भविष्य की योजनाओं के बारे में विस्तार से सदन को बताया।

सदन को सूचित करते हुए मंत्री मुनींद्र जी ने बताया कि डॉ. राकेश जी (मथुरा) के सहयोग से महासभा के द्वारा महाविद्या देवी मंदिर की पुताई व पानी की व्यवस्था कराई गई है। इसके साथ ही एक लोहे का गेट भी लगवाया गया है। राकेश जी ने एक सोलर लाइट की व्यवस्था भी करवाई है।

बैठक के अंतिम पड़ाव में संरक्षकों आशीष वचनों के अंतर्गत सर्वश्री कमलेश पांडे जी (नोएडा) ने कहा कि सभी पूर्वाग्रहों को छोड़ डॉ प्रदीप जी की कार्यकारिणी की पहली बैठक होलीपुरा में आयोजित की जानी चाहिए। हमें कोरोना को हराकर होलीपुरा को जिताना है। इसका ऋषभ जी (देहरादून) ने भी समर्थन किया एवम मदन जी (कोलकाता) में कहा कि अब रोटी – कपड़ा के साथ आवास की व्यवस्था भी की जानी चाहिए। ततपश्चात विष्णुकांत जी (नोएडा) ने कैलेंडर के साथ एक डायरी के प्रकाशन पर भी जोर दिया। जिसमें समाज के संस्कारों व रीति रिवाज व गानों को प्राथमिकता दी जाए। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि मैं कमलेश जी की बात से सहमत हूँ कि हमें मिलकर कोरोना को हराना है व होलीपुरा को जिताना है। आपने पद्मभूषण स्वरकोकिला स्व. लता जी को समाज की ओर से सादर श्रद्धांजलि भी अर्पित की है। राजेन्द्र नाथ जी (कोलकाता) ने अपने संदेश में वृद्ध आश्रम की प्रगति की जानकारी देने का आग्रह किया।

तदुपरांत डॉ. सतीश जी ने कहा कि होलीपुरा में शीघ्र ही बैठक का आयोजन किया जाना चाहिए होलीपुरा में कोरोना है ही नहीं।आप सभी सादर आमंत्रित हैं। आप व आपकी टीम विपरीत परिस्थितियों में भी अच्छा कार्य कर रही है। प्रदीप जी से निवेदन है कि वह अपने कार्यकाल की प्रथम बैठक का आयोजन होलीपुरा में ही करें। हम सभी आपके स्वागत हेतु तैयार हैं।

बैठक के अंत में सभापति डॉ. प्रदीप जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि कैलेंडर के पत्रिका में प्रकाशन का सुझाव अच्छा है। विष्णुकांत जी के डायरी प्रकाशन के सुझाव पर विचार किया जाएगा। गुल्लक योजना को संपूर्ण समाज तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे। रज्जन जी के वृद्ध आश्रम योजना की प्रगति पर जानकारी देते हुए हुए आपने बताया कि अभी हम लोग इस कार्य में सफल नहीं हुए हैं। लेकिन हरिद्वार, मथुरा–वृंदावन व अयोध्या में तत्कालिक व्यवस्था की गई है। लेकिन अभी तक हमारे पास एक भी आवेदन नहीं आया है। चतुर्वेदी बिजनेस नेटवर्क का कार्य अच्छा चल रहा है। कॉल सेंटर के समय से पूर्व चलन में आने के कारण असफल होने के ललित जी की बात से मैं सहमत हूँ। हैदराबाद सभा का प्रयास अनुकरणीय है। हम लोग उच्च शिक्षा हेतु सहायता देने या छात्रवृत्ति उपलब्ध कराने का प्रयास भी कर रहे हैं। महासभा के इतिहास के बारे में भाई भरत ने बताया हमारा प्रयास है कि हर घर में महासभा की 100 वर्ष की यात्रा का विवरण पहुंचे। हमारे द्वारा चलाई जा रही सभी योजनाओं में आप सभी के सहयोग हेतु बहुत–बहुत आभार।

बैठक के अंत में मंत्री मुनीन्द्र नाथ जी के शोक प्रस्ताव पर सभी उपस्थित बाँधवों ने 2 मिनट का मौन रख दिवंगत स्वजनों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

विवरण प्रस्तुति
मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, सचिव,महासभा
शशांक चतुर्वेदी, संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका

होली

- श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

"मेरा मनमोहना बंशी वाला
ऐसी मार गया पिचकारी, भींज गयी साड़ी,
दूर भया ठाड़ा।"

होली का त्यौहार वैसे तो हिन्दुओं का त्यौहार माना जाता है, परन्तु इसे सभी धर्म एवं संपद्राय के लोग उल्लास एवं प्रेमपूर्वक मनाते हैं। होली को रंगोत्सव के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन सभी लोग आपसी गिले-शिकवे भूलकर एक-दूसरे को रंग, अबीर और गुलाल लगाते हैं। मिठाईयां आपस में बांटते और खिलाते हैं। होली को प्रकृति और प्रेम का पर्व भी माना जाता है। होली के त्यौहार को राष्ट्रीय त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। इस दिन स्कूल, कॉलेज, आफिस सभी की छुट्टी रहती है, ताकि लोग अपने परिवार और इष्ट-मित्रों के साथ इस रंग-बिरंगे त्यौहार को मना सकें। होली ही एकमात्र ऐसा त्यौहार है, जिसमें लोग आपसी दुश्मनी भुलाकर एक-दूसरे के गले लग जाते हैं और रंग लगाते हैं। इस त्यौहार को अक्सर मार्च महीने में मनाया जाता है। होली के पीछे राजा हिरण्यकश्यप और भक्त प्रहलाद की कथा बहुत प्रचलित है।

यह पर्व फाल्गुन की पूर्णिमा से प्रारंभ होता है। फाल्गुन की पूर्णिमा की रात होली जलायी जाती है और अगली सुबह यानि चैत्र मास की परिवा की सुबह खेली जाती है।

पहले के लोग प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करते थे। अतः इस त्यौहार को प्रकृति के करीब माना जाता है। इन प्राकृतिक रंगों में टेसू के फूलों का रंग सर्वोत्तम माना जाता था।

होली का त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाया जाता है। इस त्यौहार में बच्चे, बूढ़े और जवान सभी उम्र के लोग पानी के रंग और सूखे रंग लगा कर होली खेलते है। लोग ढोल और ताशे बजाते हैं। टोलियों में घूम-घूम कर रंग डालते हुए नाचते गाते हैं। इस त्यौहार का पहला दिन जिस रात होली जलाते हैं, उसे होलिका दहन भी कहते हैं। दूसरा रंग खेलने वाले दिन को धुर खेल धुलेंडी, धुरड्डी और धूरिवंदन के नाम से भी जाना जाता है।

मिठाइयां तो होली की विशेषता है। होली की मिठाइयों में गुझिया का बहुत महत्व है। इस त्यौहार पर घरों में गुझिया, गुलाब-जामुन, लड्डू, बर्फी आदि बनाए जाते हैं। नमकीन का तो क्या कहना – सेंव, मठरी, साकें, चाकोली आदि प्रायः हर घर में तैयार पाया जाता है।

गुझियों के साथ अधिकांश प्रांतों में भांग-ठंडई का रिवाज भी

देखा गया है। मावा गुझिया की तो बात ही निराली है। ठंडई वह पेय है, जो सर्दियों के जाने और गर्मियों के आने के बीच स्वादिष्ट और पौष्टिक आहार माना गया है, लेकिन होली परंपरा में इसका सीधा संबंध भांग के साथ रहा है। होली के कई रंग हैं। होलिका दहन से इस त्यौहार की शुरुआत होती है। अगले दिन रंग खेलने वाली धुलेंडी मनाई जाती है। इसके बाद भाईदूज का पर्व मनाया जाता है और एक दिन बाद रंग पंचमी त्यौहार मनाया जाता है। तब जाकर यह होली पर्व समाप्त होता है। होली ही एक ऐसा त्यौहार है, जिसमें लोग अनजाने लोगों के साथ भी रंग खेलते हैं और मुख मीठा कराते हैं और उन्हें भांग ठंडाई प्रस्तुत करते हैं।

यह त्यौहार हमारे देश के लगभग हर प्रांत में मनाया जाता है।

राजस्थान की होली – राजस्थान में होली का अलग ही रंग रहता है। हर जगह के अलग तरीके और अलग रीति-रिवाज।

राजस्थान के मरुधरा में होली के कई रूप देखने को मिलते हैं। यहां प्रदेश के अलग-अलग इलाकों में रंगों के साथ-साथ फूलों से, कोड़ों से और कंकरों से भांति-भांति की होली खेली जाती है।

करौली और भरतपुर, मथुरा से लगे होने के कारण यहां के लोग लट्ठमार होली का लुत्फ उठाते हैं। पुरुष महिलाओं पर रंग बरसाते हैं तो राधा रूपी महिलाएं पुरुषों पर लाठियों से वार करती हैं। उनसे बचते हुए पुरुषों को महिलाओं पर रंग डालना होता है। जयपुर के आदिदेव गोविंददेव जी के मंदिर में भी होली का त्यौहार बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। यहां ब्रज की तर्ज पर लाल पीली पंखुड़ियों से होली खेली जाती है। यहां भी गीत-संगीत और नृत्य का मनभावन समागम देखने को मिलता है। मन अनायास गा उठता है –

चंग धीरो रे बजावन हारा,
अमर रहे यारी जोड़ी, चंग धीरो रे।

गुजरात की होली – यहां की होली की परंपरा में छाछ से भरे मिट्टी के बर्तन का टूटना है। यहां छाछ का बर्तन ऊपर रस्सी पर बांधा जाता है और उस तक पहुंचने के लिए लोग मानव पिरामिड बनाते हैं। कुछ लोग इस पिरामिड पर बाल्टियों से रंग फेंकते हैं। छाछ बर्तन को तोड़ने के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धाएं भी होती हैं। विजेता टीम को पुरुस्कार भी दिया जाता है।

हर गली मुहल्ले में होली गीतों की आवाज गुंजायमान होती रहती है –

"उड़े उड़े रे अबीर गुलाल रे,
आ होली रमियो आज रे।।"

बंगाल की होली – बंगाल में होली के पर्व को दोल के अलावा वसंतोत्सव और दोल पूर्णिमा भी कहते हैं। हिंदी भाषियों की होली से ठीक एक दिन पहले बंगाल में दोल उत्सव होता है। दोल के एक दिन पहले होली दहन की परंपरा निभाई जाती है। जिसे बंगाल में "नेड़ा-पोड़ा" कहते हैं। बंगाल के कुछ जिलों में होलिका दहन को "चांचल" भी कहते हैं। दोल पूर्णिमा के दिन ही गंगा के नजदीक ही महाप्रभु चैतन्य का अविर्भाव हुआ था। इसलिए इस दिन को गौर पूर्णिमा भी कहते हैं। यहां ढोल मंजीरे के साथ ही भजन-कीर्तन करते हुए लोग इस त्यौहार को मनाते हैं। शांति निकेतन में आज के दिन इस उत्सव का आनंद ही अलग होता है। आज के दिन लोग गाना गुनगुनाते हैं – "ओ गृहवासी दौराजा खोल....। रंग, गुलाल से रंगे लोगों को देखकर मन अनायास गा उठता है –

छत्तीसगढ़ में होली का त्यौहार दो दिन यानि होलिका दहन और धुलेडी का ही होता है। होली में रंग खेलने के बाद स्नान कर व नए वस्त्र पहन कर लोग अपने प्रियजनों के घर होली मिलने जाते हैं। मुख मीठा कर सभी एक-दूसरे को अपनी शुभकामनाएं देते हैं। सभी प्रांत सभी जगह लोग इस त्यौहार को अपने-अपने ढंग से मनाते हैं। हर त्यौहार के साथ हमारी धार्मिक भावनाएं और परंपराएं भी जुड़ी रहती हैं। हमारे चतुर्वेदी समाज में भी होली दहन के दिन शाम/

"बाहिरे अेसो, रोंगो खैलो, ओ बाबा होली अेसेचे।

ओडिशा की होली – ओडिशा राज्य में होली का उत्सव कुछ मामूली पहलुओं को छोड़कर पश्चिम बंगाल जैसा ही मनाया जाता है। होली उड़ीसा का प्रसिद्ध त्यौहार है। यहां की होली का दूसरा नाम "डोल पूर्णिमा" भी है। इस अवसर पर यहां के लोग भगवान जगन्नाथ की मूर्ति की पूजा करते हैं। रंगों, गुलाल से यहां के लोग भी त्यौहार मनाते हैं। "पीठा" एक प्रकार का मीठा पकवान इस दिन अवश्य बनाते हैं।

बिहार की होली – बिहार राज्य में भी होली का उत्सव बहुत उल्लासपूर्वक मनाया जाता है। यहां भी लोग गाते-बजाते, रंग खेलते सड़कों पर निकलते हैं। बिहार में आज के दिन का मुख्य पकवान मालपुआ और दही-बड़ा होता है। इनके होली गीतों की धुनें भी बहुत मधुर होती है। मुझे कुछ परिचित के गीत याद आ रहे हैं –

'फगुआ अैल, फगुआ गैल, फगुआ चलियो रे।"

बिहार के पूर्णिया जिले के सिकलीगढ़ में वह स्थान है, जहां होलिका भगवान विष्णु के परम भक्त प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर जलती चिता के बीच बैठ गईं थीं। इस गांव को धरहरा के

नाम से जाना जाता है। इस चिता में होलिका जल गईं थीं और भक्त प्रहलाद विष्णु भक्ति के कारण बच गए थे। होलिका को वरदान था कि अग्नि उन्हें जला नहीं सकती थी। यह कहानी सभी जानते हैं, पर यह नहीं जानते कि यह जगह कौन सी है और कहा स्थित है।

ब्रज की होली –

"आज बिरज में होरी रे रसिया,
होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया।।"

ब्रज की होली देश भर में प्रसिद्ध है। ब्रज की होली कई मामले में खास तो है ही, लेकिन यहां की होली के रंग अपने आप में खास हैं। होली के रंगों में श्रद्धा और भक्ति का ऐसा मिश्रण होता है जो होली पर मथुरा, बृंदावन आने वाले लोगों को भक्ति रस में सराबोर कर देता है। इस भक्ति भाव को देखकर किसी गीतकार ने गाया है – **"नेह लग्यो मेरो श्याम सुंदर सों।"**

ब्रज में होली का आयोजन बसंत पंचमी से आरंभ हो जाता है। शाम/रात्रि के समय होली गीतों के आयोजन घरों में होने लगते हैं। जहां बच्चे, बूढ़े और जवान सभी इस कार्यक्रम में भाग लेते हैं। वैसे तो बसंत पंचमी से ही व्रज के अंतर्गत आने वाले अलीगढ़ आदि शहरों के मंदिरों की पोशाक भोग और श्रृंगार तक में इसकी झलक दिखने लगती है। बदलते समय में अब सिर्फ कुछ मंदिरों में टेसू के फूलों का रंग देखेने के मिलता है। कुछ-कुछ घरों में टेसू के फूलों का रंग आज भी बनाया जाता है।

बरसाना में लड्डू की होली और लट्ठमार होली बहुत प्रसिद्ध है। लड्डू की होली ब्रज की होली का पहला दिन है। लड्डू मार होली में मंदिरों में भक्तों का जमावड़ा होता है। ये लोग नाचते हैं, गाते हैं और एक दूसरे पर लड्डू फेंक कर होली खेलते हैं। अंततः ये लड्डू प्रसाद के रूप में वितरित कर दिए जाते हैं।

वहीं बरसाना की ही रंगीली गली में, लट्ठमार होली के दिन, बरसाना की महिलाएं लाठियां लेकर पुरुषों पर वार करते हुए उन्हें दूर तक भगाती हैं और पुरुष उन पर रंग फेकते जाते हैं। चारों ओर का नजारा यानि कि यत्र-तत्र सर्वत्र रंग ही रंग दिखता है और गायक टोली गा उठती है –

'नदिया रंग सौं भरी निकसन को डगर ना रहीं।"

श्रीकृष्ण जी सबसे मुख्य और प्रसिद्ध मंदिर वृंदावन में स्थित "बांके बिहारी जी का मंदिर" है। यहां होली के दिन श्री राधे कृष्ण का श्रृंगार सुंदर और ताजे फूलों से किया जाता है। यहां भक्तगण, श्रद्धालु और पुजारी फूलों की पंखुड़ियों से होली खेलते हैं।

गोकुल की छड़ीमार होली अपने आप में बहुत प्रसिद्ध है। कहते हैं कि कान्हा जी जब थोड़े बड़े हुए तो होली खेलने गोकुल जाने लगे। तब वहां की महिलाओं ने छोटी-छोटी छड़ी से इन्हें मार के भगाना आरंभ किया, क्योंकि लाठ से मारने से छोटे से कान्हा जी को चोट लगने का डर था। इस दिन महिलाओं का भाव यही रहता था –

"होरी खेल आयौ श्याम, आज जाए रंग में बोरो रहीं।।"

होली खेलते समय की नोंक-झोंक भी देखने योग्य है –

"नैनन में पिचकारी दई, मोय गारी दई,
होरी खेली न जाय, होरी खेली न जाय।।

मध्य प्रदेश में होली का त्यौहार होलिका दहन से रंग पंचमी तक चलता है। यहां के लोगों का उल्लास इस दिन देखते ही बनता है। ढफ, ढोल की ताल पर नाचती, मिठाइयों को बांटते लोगों को देखना अपने आप में एक सुखद अनुभूति होती है। रंग-पंचमी के दिन माहौल फिर से वही होली खेलने के दिन का हो जाता है। शाम के समय लोग मिलने-जुलने, गीत-संगीत, सुस्वाद भोजन का आयोजन करते हैं और इस प्रकार होली के त्यौहार का समापन होता है।

छत्तीसगढ़ में होली का त्यौहार दो दिन यानि होलिका दहन और धुलेडी का ही होता है। होली में रंग खेलने के बाद स्नान कर व नए वस्त्र पहन कर लोग अपने प्रियजनों के घर होली मिलने जाते हैं। मुख मीठा कर सभी एक-दूसरे को अपनी शुभकामनाएं देते हैं। सभी प्रांत सभी जगह लोग इस त्यौहार को अपने-अपने ढंग से मनाते हैं। हर त्यौहार के साथ हमारी धार्मिक भावनाएं और परंपराएं भी जुड़ी रहती हैं। हमारे चतुर्वेदी समाज में भी होली दहन के दिन शाम/रात को होलिका पूजन होता है। इस पूजन की थाली में रोली, गुलाल, हल्दी, दीपक, अगरबत्ती, माचिस, अठयावरी, पिचकियां, हलुआ, लोटे में जल रखते हैं। लोटे के जल में कुछ चावल के दाने या हल्दी, या गुड़ का छोटा टुकड़ा और चना दाल डालते हैं। ऐपन भी साथ में रखा जाता है। होलिका के सामने थोड़ी सी जगह साफ कर उस पर हल्दी लगा कर सतिया बना दिया जाता है। अब जल, रोली, चावल, गुलाल आदि होली पर चढ़ा दिया जाता है। दीपक, अगरबत्ती जलाकर धुआं देते हैं। फिर हलुआ-पूड़ी चढ़ा दिया जाता है। हर गांव की प्रथा अलग-अलग होती है। कुछ लोगों में होली पर अठयावरी और पिचकिया ही चढ़ाया जाता है। इसी प्रकार कुछ घरों में ठंडी होली पूजी जाती है और कहीं-कहीं जलती होली पूजने का रिवाज है। जलती होली में पुरुष गन्ना होरा और गोला भूनते हुए होली की परिक्रमा करते हैं। घर में बने सभी पकवानों का भोग और अछूता लोग अपने रिवाज के अनुसार करते हैं। कुछ स्थानों पर होलिका दहन के दिन भोग और अछूता करते हैं तो कुछ परिवारों में होली खेलने के दिन भोग-अछूता किया जाता है।

आप सभी को होली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

मोसे न खेलों होरी

- दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ

फूलों पर खिलता यौवन,मंद मंद बहती ठण्डी बयार, नयी-नयी निकलती कोंपले और चारों तरफ बिखरती मादकता के साथ अंगड़ाई लेता, बचपन जैसा खिलखिलाता मौसम...(सही पकड़े है) अर्थात बसंत ऋतु में बसंत पंचमी,जब ज्ञान व विद्या की देवी सरस्वती का पूजन किया जाता है। सरस्वती पूजन के साथ ही वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर में बसंती गुलाल से बृज में होलिकात्सव की शुरुआत हो जाती है। तभी तो संगीत की साक्षात सरस्वती लता दीदी ने सन 1947 में "आपकी सेवा" फिल्म में अपना पहला हिन्दी गाना होली पर गाया- पा लागू कर जोरी रे, श्याम मोसे ना खेलो होरी। वहीं कोलकाता के बलदेव मंदिर में 125 वर्षों से बसंत पंचमी से होली गायन - वादन, मैनपुरी में भी हनुमान मंदिर में बसंत पंचमी से ही होली गायन-वादन की शुरुआत होती है। बृज में होलिकात्सव बसंत पंचमी से शुरू होकर चैत्र कृष्ण पक्ष अष्टमी तक चलता है। लखनऊ में भी बसंत पंचमी को ही चौराहे पर अरण्डी के पेड़ की डाल लगाकर होली स्थापना की जाती है। चौबो में भी बसंत पंचमी से सामूहिक सामाजिक होली गायन-वादन शुरू हो जाता है। लखनऊ में कभी चतुर्वेदी नरही, चारबाग एवं मोती नगर में ही केंद्रित थे। तब हर रविवार को कहीं न कहीं सामूहिक होली गायन होता था। होली मिलन समारोह भी प्रायः चारबाग में गया प्रसाद धर्मशाला में आयोजित होता था। एक बार उसमें अनूप जलोटा भी शामिल हुए थे। पिछले 25 साल में हर शहर की तरह लखनऊ भी काफी फैल गया है।अब सामूहिक कार्यक्रम संभव नहीं हो पाते हैं, फिर भी चार-छः जगह होली गायन हो ही जाता था, लेकिन कोरोना के कारण विगत दो वर्षों से होली मिलन समारोह भी आयोजित नहीं हो सका। फिर भी होली के दिन क्षेत्रवार सामाजिक सामूहिक होली खेलने के साथ ही गायन का आनन्द लेते हैं। गोमती नगर-इंदिरा नगर में पदम भाई, प्रफुल्ल जी, पदम जी (तरसोखर), अखिलेश जी, सुबोध जी, संजय जी। विकास नगर में प्रदीप (मुन्ना भाई),नवीन जी, नीरज जी, चौंक में ललित जी, दिवाकर जी,एल डी ए -आशियाना में अतुल जी,मिंटू जी, राकेश जी,जलज जी,अजय जी, चारबाग में संतोष जी, शिशिर जी, आंनद जी मोती नगर-मालवीय नगर में महेश चाचा, डॉ वीरेंद्र जी, विपिन जी,शैल जी, सौरभ जी, हरीश जी बांधवों के साथ अग्रणी भूमिका निभाते हैं। मोती नगर ग्रुप में होली खेलने के साथ ही हम सब एक-दूसरे के घरों में जाकर रंगो की मस्ती के साथ ही गायन एवं जलपान का भी मजा लेते हैं। सर्वप्रथम हरीश जी के घर पर ठीक 9 बजे हम-सब एकत्रित हो कर भांग-ठंडाई का आनंद लेने के बाद रंग खेलते हुए जलपान के साथ होली गायन वादन चलता है-

1.चहु ओर नदियां रंग से भरी, निक्सन कों डगर ना रही।।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी,बीच में जमुना बही।।
हमरे संग की पार उतरि गयीं,हम ही अकेली रहीं।।
अपुन तो हरि पार उतर गए,हम सों कछु ना कहीं।।
चहुं ओर नदियां....

2.जो काहू कों मिलहिं श्याम, कहि दीजो हमारी राम- राम।।
गलिन-गलिन अरु द्वार-द्वार पे,होरी की है रही धूम-धाम।।
खान-पान राधा तजि दीन्हों,ध्यान तुम्हारौ आठ जाम।।
हरिविलास हरि सों जाइ कहियो,क्यो छोड़ी राधा सी वाम।।
जो काहू कौ मिलहि श्याम.....

3.रसिया कों नारि बनाओं री।।
कटि लहंगा गल मांहि कंचुकी,
सिर हों चुनरि उढ़ाओ री।।
हाथन मेंहदी पांव महावर,
नक बे सरि पहनाओं री।।
नारायण प्रभु तारी बजाय कें,
जसुमति निकट नचाओ री।।
रसिया कों.....

संगत आगे चलते हुए दिलीप जी के यहां पहुंच कर रंग रंगोली के साथ होली गायन वादन----

1. होरी हो ब्रजराज दुलारे।। बनि बनि आई सबै मन भाई बरसाने कीं,अहो प्राण प्यारे।।बाजुहि निकसि विहंसि मुख पंकज,छिपन दुरन हिय हरन हमारे।।कै कर लेहु कनक पिचकारी,कै कहो हां हां हां हम हारे।। उमड़ी प्रेम नदी चहुं दिसि तें,तोरि तोरि व्रत नेम करारे।। करुणा सिंधु मिलन के कारण,लोक लाज कुल कानि बिसारे।।झपटि लपटि गई श्याम सुंदर सों,चपल छटा छबि ऊपर वारे।।जुगल भटू भई लटू लाल पै,पिय प्यारी के

चरण पखारे।। होरी हो .....

2.गारी न दै जसुदा के लला,होरी खेलन आए तौ खेलों भला।।गारी देउगे गारी खाउगे, एक की लाख कहौगी भला।।जों तुम चाहौं भलाई कन्हाई, अपनी डगर चलें जाउ भला।। नन्द जसोदा सहित बिकैहौ,जो गिरि जाय मेरे कर कौ छला।।गारी न...

अब संगत बढ़ती हुई महेश चाचा एवं गजेन्द्र चाचा के दरबार में धमाल मचाने वाली है, यहां एक ड्रम में टेसू के फूलों से तैयार रंग मिलता है, यहां ज़्यादा ही धमा-चौकड़ी होती हैं,घर की महिलाएं भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं, होली गायन- वादन महेश चाचा, वीरेंद्र चाचा,शैल जी, विपिन जी,अतुल जी, राजीव जी, शरद जी,मनोज जी,सौमेंद्र जी के साथ ही प्रसिद्ध होली गायक सौरभ जी भी अपना हुनर दिखाते हैं। महिलाओं में विभा जी, अंजलि जी, नीलिमा जी, युवकों में तन्मय, अंकुर,मनु, विभोर,सोहम भी अच्छे फनकार है।

1.होरी खेलन दै री ननदिया।।गलीरे गल्यारे कान्हा धूम मचावै,हम पै सही न परै री ननदिया।।जोई जोई कहैगी सोई सोई करौगी,तू इतनी अरज सुन लेरी ननदिया।। आनन्द धन कों मैं जाय भिजोऊं,आजु यही प्रण है री ननदिया।।होरी खेलन....

2.सांवलिया तू बेगि खबर लिजो मोरी,मैं तो शरणागति तेरी।।बाप कहै बेटी व्याहूं द्वारका, भैया कहै चंदेरी।।जो शिशुपाल मौर धरि ऐहै,जरिए बरि है जाउ ढेरी।। सिंह शिकार स्यार लिये जावै, चहुं दिसि असुरन घेरी।। रुक्मिणी जी ने पाती भेजी,विप्र के हाथ सबेरी।।पाती बांचि विलम्ब न करियो,दीजो संदेसौ बहोरी।। कुण्डल पुर में देवी अंबिका,पूजन जैहों सबेरी।।तहं चलि अइयो कृष्ण कन्हैया,जनम जनम की चेरी।। सांवलिया तू.....

3.नैननि में पिचकारी दई,होरी खेली न जाय।। तेरे लंगर लंगराई मो सों कीन्ही,केसरि कींच कपोलनि दीन्ही,लै गुलाल ठाढ़ो मृदु मुसिकाय।।नैक न कानि करत काहू की,आंखि बचावत बलदाऊ की,यह उपाधि मो पै सही न जाय।।औचक कुचनि कुमकुमा मारै,रंग सुरंग सीस पै डारै,अंग लपटि हंसि हां हांखाय।। होरी के दिनन मो हो दूनों दूनों अटकै, सालिगराम कौन जाय हटकै,यह ऊधम सुनि सासु रिसाय।।नैननि में... इसके बाद संगत विपिन जी एवं पंकज जी के दौलतखाने पर पहुंचती हैं, वहां नमन तथा केयूर भी हौसला बढ़ाने का प्रयास करते हैं,

1.कपोलन कौने दियो ये गुलाल।।केशरि रंग छिरकौ तोरी सारी।।मारग चलत आनि चहुं दिस सौ, पूंछति हैं ब्रजबाल।।नहि चितवत नहि बोलत नैकहु,कौने कियो यह हाल।। ललित किशोरी कहत क्यो न साची,तोहि मिले नंदलाल।।कपोलन.....

2.होरी आई सब मिलेंगे, अपने अपने यार से।।

हम गले मिल मिल के,रोयेंगे दरो दीवार से।।कोई रंगे रंग में कपड़े, कोई उडावै है गुलाल।। हमने कपड़े रंग लिये है, आंसुओं की धार से।। कोई खेलें रंग होली, कोई नाचें दे दे ताल।। हमने विरह गीत गाए, है सनम की याद में।। होरी आई.....

जब संगत शैल जी के घर पहुंचीं तो वहां रंग के साथ जलपान व होली गायन...

बाजि रही पायलिया,छम छम बाजि रही।। कौने बनाइ द ई पांच पैजानियां,कौने बनाई करधनियां।। कौने गढ़ाइ दो गरे कौ हरवा,कौने नाक नथुनियां।। ससुर बनाइ दई पांय पायलिया,जेठ बनाइ दई करधनियां।। देवर गढाइ दऔ गरे हो हरवा,सैया नाक नथुनियां।। कैसे टूटी पांय पयलिया, कैसे टूटी करधनियां।। कैसे टूटो गरे को हरवा, कैसे नाक नथुनियां।। पांय हले सौ पांय पयलियां,कमर हले करधनियां।। खेलत उडि गऔ गरे कौ हरवा,पोंछत नाक नथनियां।। बाजि रही.....

अब हमारा कारंवा एल डी ए स्थित डॉ वीरेंद्र जी एवं विनोद जी के दरबार में हाजिर होता है जहां विकास व प्रतीक हम लोग का जोरदार स्वागत करते हैं, उसी रौनक के साथ होली गायन-वादन होता है,

1. चलो सखी जमुना पै ,मची आज होरी,नंद के ने घैर ली राधा गोरी।।लिये कर मे गुलाल,आयो जसोदा को लाल,चलै अलबैली चाल,नाचै दै दै के ताल,मारै पिचकारी कहै,होरी होरी।।मेरी एक नहीं मानी, गई भरने कों पानी,नन्द कै ने आनि, बहियां झकझोरी।। चलो सखी....-2

अब 3 बजने वाले थे लेकिन सबका जोश जोर मार रहा था कि

1. बालम सुन लेओ बात हमारी, मोसे लड़े तेरी महतारी,सबह शाम को.....

मैं तो जाऊंगी सवेरे अपने गांव को।।काऊ दिन आधा फुलका मिल जाए,काऊ दिन रहूं उपासी,सोलह सौलह फुलका खां जाएं ससुरा सत्यानासी।।मैं तो जाऊंगी सवेरे अपने गांव को.....।।

2. जमुना के तट पर मारी नजरिया ऐसी सांवरिया ने, घायल हो गई पल में कि गजरा गिर गया जमुना जल में.....।।

तभी हरीश जी, राजीव जी ने तान ली...

यशोदा नन्द को हमें तो जोगनियां बनाइ गयौ थी।।आप तो ओढ़े साल दुशाला, हमें तो कामरिया उढाइ गयौ री।।आप तो खावे मांखन मिसरी, हमें तो उपवासा कराय गयौ री।।आप तो जाय द्वारका बस गय, हमें तो गोकुल में बसाइ गयौ री।। यशोदा नन्द.....

इसके बाद महेश चाचा के कहने पर.....

ढप बाजो रे,छैल मतवारे को.....

पालागन, पालागन के साथ ही अगली होली में मिलने के विश्वास से सब अपने अपने घर को चल दिए।।

होली

- अम्बर पाण्डेय, मैनपुरी/भोपाल

जब कोई व्यक्ति नियम व निष्ठा के साथ संकल्प लेकर कोई अनुष्ठान करता है तो हम उसे व्रत कहते हैं। जब उस व्रत में परिवार शामिल हो जाता है, तो उसे हम पर्व कहते हैं और जब वह पर्व समाज का एक अभिन्न अंग बन जाता है व सामाजिक रूप से बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है तो उसे हम त्यौहार या उत्सव कहते हैं। हमारे कृषि प्रधान देश में पर्वों और त्यौहारों का सम्बन्ध खेती से है। उदाहरण के लिये हमारे दो बड़े त्यौहारों में दीपावली खरीफ की फसल पकने पर मनाई जाती है और होली रवी की फसल पकने पर। सम्बन्धित फसलों से प्राप्त अनाज को सर्वप्रथम ईश्वर को समर्पित करते हैं और फिर परिवार और समाज के साथ मिलकर खुशियाँ मनाते हैं। प्रत्येक पर्व-त्यौहार के साथ कुछ परम्पराएँ भी जुड़ी होती हैं जिन पर हमारी संस्कृति की छाप और स्थानीय प्रभाव स्पष्ट झलकता है। स्थानीय प्रभाव को साहित्यिक भाषा में अलंकार कहते हैं जिसका उपयोग सौन्दर्य को निखार कर विशेष और दर्शनीय बना देता है।

होली के त्यौहार का अपना ही रंग है, अपना ही महत्व है। यह बसंत ऋतु में मनाया जाता है। इस समय प्रकृति चारों ओर तरह-तरह के रंग बिखेरती है। वनों में टेसू के फूलों की छटा, खेतों में सरसों के पीले फूलों का सौन्दर्य, उद्यानों में खिल-खिलाते रंग-बिरंगे फूल वातावरण को अनुपम और सुरभित कर देते हैं। प्रकृति के इसी मनोहारी रूप से एकाकार होने की लालसा में मनुष्य एक-दूसरे पर तरह-तरह के रंग छिड़कते हैं और सामूहिक रूप से आनन्दित होते हुए प्रकृति के साथ अपनी निकटता दर्शाते हैं।

वर्तमान समय में शायद ही कोई रंग बचा हो जिसका प्रयोग होली खेलने में न किया जाता हो किन्तु पारम्परिक रूप से लाल, पीले और हरे रंगों का प्रयोग अच्छा माना जाता है। इस मान्यता के पीछे आध्यात्मिक भावना भी है। शास्त्रों के अनुसार इस सृष्टि का निर्माण पाँच तत्वों से मिलकर हुआ है। प्रत्येक तत्व का अलग-अलग रंग है- आकाश का नीला, वायु का हरा, अग्नि का लाल, पृथ्वी का पीला और जल का सफेद। सम्पूर्ण दृश्य जगत इन्हीं का पसारा है। यही कारण है कि रंगों के त्यौहार होली में इन्हीं रंगों से एक-दूसरे को तर-बतर करने की परम्परा है। होली की विशेषता है कि रंगों की मस्ती में डूबकर सब वर्ण और वर्ग का भेद भूलकर एक रंग हो जाते हैं। पर्व और त्यौहार मनाने का सच्चा आनन्द तभी है जब तन और मन दोनों प्रफुल्लित हों। तन को प्रफुल्लित करने के लिये तो हम विभिन्न रंगों में विभिन्न प्रकार की सुगन्धियों का मिश्रण करते हैं और इन सुगन्धित रंगों से एक-दूसरे को सराबोर करते हैं। पिचकारियों और फुहारों से इस प्रकार रंग वर्षा करते हैं कि फागुन में सावन की फुहारों का मजा आ जाता है। तभी तो किसी कवि ने कहा है- "पौर वृषभान की आजु रंगझर बरसै री" और "फागुन में सावन सरसै री। होली खेलने के लिये सबसे उत्तम है टेसू का रंग। यह सुगन्धित तो होता ही है, चर्म-रोगों को भी दूर करता है। गीले रंगों के साथ सूखे रंग (गुलाल) का भी प्रयोग खूब किया जाता है। तेतिस कोटि देव जुरि आएं और ऐसे रंग उड़े कि 'उड़त गुलाल लाल भए बादर'।

राग काफी

लाल ही लाल भए होरी खेल रहे नंदलाल।।
लाल ही लाल-- ।।
लाल लली ललकार दुहूँ दिसि उड़ि रहे लाल गुलाल।
वे उनकें कंचुकि तकि मारत वे मारत तकि गाल।।
लाल ही लाल-- ।।
लाल भए सिर पेंच लाल भए पट जामा भए लाल।
दल समेत भई लाल लाड़ली लालन की गलमाल।।
लाल ही लाल -- ।।
लाल भए छिति गगन लाल भए शशि उडगन भए लाल।
उड़त गुलाल लाल भए बादर रवि मंडल भए लाल ।।
लाल ही लाल भए -- ।।
लाल लाल सब ग्वाल-बाल भए ब्रजबासी भए लाल।
लालन ललित लाल लखि लाला पल फेरत भए लाल ।।
लाल ही लाल भए-- ।।

चतुर्वेदी समाज की अलग ही विशेषता है। हमारे यहाँ अधिकतर

लाल और पीले रंगों से होली खेली जाती है। लाल रंग को नवजीवन और उत्साह का प्रतीक माना जाता है। सूर्य भगवान नित्य प्रातः उषाकाल में अपनी नव-किरणों से समस्त सृष्टि के साथ होली खेलकर जोश, सजीवता और उल्लास के रंग से उसे लाल कर देते हैं। पीला रंग पवित्रता, सच्चरित्रता और सहनशीलता का संदेश देता है। इसीलिये हमारे पूर्वजों ने इन्हीं दो रंगों के प्रयोग को स्वीकृति प्रदान की है। हरा रंग प्रकृति का रंग है और प्रसन्नता तथा नवीनता का संदेशवाहक है। किन्तु अपने समाज में इस रंग का प्रयोग प्रचुरता से नहीं किया जाता है। सम्भवतः इसलिये कि प्रकृति के सानिध्य में रहने वाला हमारा समाज स्वभाव से प्रसन्नचित्त है। अतः हरे रंग का वाह्य प्रयोग न करके इसे अन्दर (घट में) 'विजया' के रूप में डालती हैं और फिर सबको हरा (प्रसन्न) भरा (मस्त) रखती हैं। होली में तन के साथ मन भी रंगा जाना चाहिए मगर इतना कि रंगीन मिजाजी की सीमा न पार कर जाये। मन के हुलास को पूरा करने के लिये संगीत-साहित्य का सहारा लिया जाता है। चतुर्वेदी समाज में होली गायन की बड़ी पुरानी परिपाटी है। फाग और होली गाने का प्रारम्भ बसंत पंचमी से ही हो जाता है। मंदिरों में या आमंत्रित करने वालों के स्थान पर एक से एक सुन्दर और टकसाली साहित्यिक रचनाओं की प्रस्तुति शुद्ध शास्त्रीय रागों में की जाती है। ध्यान देने की बात तो यह है कि इन सामूहिक गायकों में शायद ही किसी ने संगीत का विधिवत प्रशिक्षण प्राप्त किया हो। सामूहिकरूप से गाते-गाते इस कला का हस्तान्तरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्वतः और स्वभाविक रूप से हो जाता है। विशेषज्ञ भी शायद ही इस गायन में कोई त्रुटि निकाल पाएँ। अलग-अलग स्थानों पर रहने वाले चतुर्वेदियों के गायन की क्षेत्रीय विशेषताएँ भी हैं, जैसे मैनपुरी में राग काफी, होलीपुरा में राग धमार और चन्द्रपुर में चैती प्रमुखता से गाई जाती है। और 'रसिया' गायन! यह तो सर्व रसिकजनों को रस-सिंचित करता ही है।

राग काफी

नेहा लग्यौ मेरौ स्याम सुन्दर सौं।। नेहा -- ।।
आयौ बसन्त सबै बन फूले, खेतन फूली है सरसौं।
हम बौरी भईं स्याम बिरह में, निकसत प्रान अधर सौं,कहौ जाय मुरलीधर सौं।। नेहा-- ।।
फागुन फाग खेलैं सब सखियाँ अपने-अपनेबर सौं।
हम बिनु स्याम जुगिन ह्वै निकसीं, धूरि उड़ावत कर सौं, चलीं गोकुल की डगर सौं।। नेहा -- ।।
ऊधौ जाय द्वारिका में कहियो इतनी अरज मेरी हरि सौं।
बिरह व्यथा में जियरा जरत है, जबसें गये हरि घर सौं, दरस देखन कौं तरसौं ।। नेहा-- ।।
जगन्नाथ की यही है बिनती, कृपासिन्धु गिरधर सौं।
गहरी नदिया नाव झाँझरी, पार करौ निज कर सौं, उतरि जाँय भवसागर सौं।। नेहा-- ।।

राग विहाग

श्याम मुख रंग की बूंद ढरी।। श्याम-- ।।
मानौं कनक कसौटी ऊपर, कंचन कस सी परी।। श्याम-- ।।
भाल बिसाल गुलाल लसनि लखि, उपमा सब बिसरी।
मानहुँ अरुन किरन सूरज की, अम्बर में पसरी।। श्याम-- ।।
रुचिर केश मानहुँ घनमाला बरसत अनंद झरी।
कृपानिधान निरखत यह सोभा, हियरा मांझ अरी।।
श्याम-- ।।
(नोट -- कहीं- कहीं 'कृपानिधान' के स्थान पर 'सूरस्याम' का भी पाठ मिलता है।)

इस पर्व की एक और सांस्कृतिक परम्परा है- होलिका दहन। होलिका प्रहलाद को जलाने के लिये उसे गोद में लेकर अग्नि में प्रवेश कर गई थी। द्वेषपूर्ण भावों वाली होलिका तो जलकर राख हो गई किन्तु सद्विचारों वाले प्रहलाद को आँच भी नहीं आई। इसका सांकेतिक अर्थ है कि बीते वर्ष जो भी दुर्भावनापूर्ण व्यवहार हुआ उसे होली की अग्नि में भस्म कर प्रेम और भाईचारे के प्रहलाद को गले लगा लें। होली सो होली। ऐसी अब न हो।

अन्त में, परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। पर, परिवर्तन प्रगति के लिये होना चाहिए। हमारा गतिशील समाज परिवर्तन की धारा में बहकर संस्कृति की राधा को बदलने और भूलने को तत्पर दिख रहा है। यदि राधा और धारा का साथ रहेगा तो धारा कभी भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करेगी।

...कैसी होरी मचाई

– **शैल कुमार** (मैनपुरी/लखनऊ)

छैल मिडिल कैसी होरी मचाई।
घर में आये अंग्रेजी बोलत,समझत नाइ लुगाई।
वाटर मांगत रोटी लावत,बोल उठे झुंझलाई,
डेमफूल क्या लेआई।। छैल मिडिल कैसी होरी मचाई.....।
देसी रीत रिवाज छोड़ कर,कोट लिए सिलवाई।
खुली आगाड़ी,फटी पिछाडी। टोपी गोल लगाई, घड़ी आगे लटकाई।
छैल मिडिल कैसी होरी मचाई...।
मेज डार कुर्सी बैठे,बूटन करत सफाई,
बैठन ना पतलून देत है,ढाड़ करें मुताई,
जय धन्य अंग्रेजी आई। छैल मिडिल कैसी होरी मचाई.....।

फाग उत्सव

- भरत चंद्र चतुर्वेदी, भोपाल

होली का पावन पर्व हर्ष एवं उल्लास के साथ ही अपनी पहचान व सांस्कृतिक परंपराओं का महोत्सव है। इस दिन छोटे बड़े ऊँच-नीच का भेद नहीं रहता है। सब एक दूसरे से गले मिलकर अपने शिकवा शिकायत को भूल जाते हैं। संपूर्ण देश में यह पर्व बड़े हर्ष एवं उत्साह के साथ मनाया जाता है। परंतु ब्रज क्षेत्र का यह विशेष पर्व है। संपूर्ण बृज क्षेत्र में कृष्ण जन्माष्टमी तथा होली के पर्व विशेष रूप से आयोजित होते हैं। बृज की लठमार होली देखने विदेशों से भी नागरिक आते हैं। हमारे यहाँ होली के अवसर पर फाग, दीपचंदी, पीलू, बिहाग, कलिंगड़ा, ठड़उआ, धमार, काफी, चाल, लाचारी, राजपूती, रसिया, जकड़ी, लेद आदि शास्त्रीय संगीत के माध्यम से होली गायी जाती है। हमारे समाज में जिस घर में किसी व्यक्ति का स्वर्गवास हो जाता है। उस घर के दरवाजे पर देवी गीत गाये जाते हैं। माथुर चतुर्वेदी समाज में होली गायन की एक समृद्ध परंपरा है।

औद्योगीकरण का प्रभाव हमारे समाज पर भी पड़ा है। जिसकी वजह से दस - बारह नगरों एवं चालीस गांव में सिमटा हमारा समाज संपूर्ण देश के हिस्से में अपनी उपस्थिति का अहसास करा रहा है। परंतु हम बिखर रहे हैं इसी का परिणाम है हमारे समाज की होली गायन की समृद्ध परंपरा भी सिमटकर कुछ एक क्षेत्रों तक सीमित हो गयी है। हमारी इस सांस्कृतिक धरोहर को पुर्नजीवित करने हेतु अथवा इसे बचाये रखने हेतु हम भोपाल वासियों ने रंग पंचमी के अवसर पर प्रतिवर्ष फाग महोत्सव के कार्यक्रम को विगत साठ वर्षों से भोपाल में आयोजित कर रहे है। पूर्व में स्व. सेवाराम जी, स्व. दयानंद जी, स्व. रजनीकांत, स्व. तेजेन्द्र कुमार, स्व. प्रकाश चंद्र जी (पाइपुरी) तथा वर्तमान में मैं स्वयं तथा सर्वश्री रामचन्द्र (डव्वली), भरत (चन्द्रपुर), सुरेंद्र, राजेश, बृजेश, शशांक व तरूण, श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी, श्रीमती चित्रा, श्रीमती रश्मि, श्रीमती पदम रेखा, श्रीमती सीमा व श्रीमती सुनीता आदि का होली गायन में सहयोग रहता है।

भदावर में हमारे चतुर्वेदियों के गाँवो में यह पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। सभी गांवों में बाहर से बड़ी संख्या में सपरिवार चतुर्वेदी एकत्र होते हैं (लगभग एक हजार)। सामूहिक रूप से होली गायन का आनंद लेते हैं। भोजन भी सामूहिक रूप से होता है। पूरनमासी को ग्राम-पुराकन्हैरा में सभी गांव के लोग एकत्र होकर होलियां गाकर आनंद लेते हैं तथा रात्रि के भोजन के पश्चात कार्यक्रम होता है। परवा को सभी लोग अपने-अपने गांव में रंग खेलकर उत्सव मनाते हैं। दौज को होलीपुरा ग्राम में तथा तीज को तालगांव में सामूहिक रूप से होली गायन कार्यक्रम होता है व गायन के पश्चात भोजन भी सामूहिक होता है। हमारे गांव पुराकन्हैरा में यह कार्यक्रम चालीस वर्षों से निरंतर चल रहा है। प्रत्येक वर्ष गांव आने वालों की संख्या बढ़ रही है। चौथ को कार्यक्रम समाप्त हो जाता है तथा अगले वर्ष पुनः मिलने की उम्मीद के साथ गाँव के कार्यक्रमों की स्मृति लेकर चले जाते हैं। समाज में प्रचलित मुख्य निम्न होलियों के साथ उनकी रागों के नाम भी

आपकी सहूलियत के लिए दिए गए है।

(काफी)

आजु श्याम के मैं अंक लगौगी, कलंक लगै तौ भलें ही लगौरी।।
जरि बरि जाय कानि कुल की सब, जाल निगोड़ी भगौ तो भगौ री।।
सुनियो री मेरी पार-परौसिन, तुम उपहास करौ तो करौ री।।
दयासखी मैं होरी खेलौंगी, तोप दगौ तो भलें ही दगौ री।।

(काफी)

होरी हो ब्रज राज दुलारे।।
बहुत दिनन सें तुम मनमोहन, फाग ही फाग पुकारे।।
आज देखियो सैर फाग की, पिचकारिन के फुहारे।।
चलें जहाँ कुमकुम न्यारे।।
अब क्यों जाय छिपे जननी ढिंग, ओ द्वै बापनि वारे।
कै तौ निकसि कें होरी खैलौ, कै मुख सों कहौ हारे,
जोरि कर आगें हमारे।।
निपट अनीति उठाई है मोहन, रोकत गैल गलारे।
'नारायण' तब जानि परैगी, आवौगे द्वारें हमारे,
दरस हमकों दिखला रे।।

(विहाग)

है गए श्याम दौज के चन्दा।।
मधुबन जाइ बने मधुबनियाँ, कुबजा डारो प्रेम को फन्दा।।
गोकुल सें सब प्रेम बिसारौ, छोड़े बिलखत जसुमति नन्दा।।
''मीरा'' के प्रभु गिरधर नागर, पहलौ प्रेम परौ अब मन्दा।।

(चाल)

ननदी अब का चढ़ऊँ अटरियाँ, बिराने है गये सईयाँ।।
और दिना मोसै मुख हू न बोले, आज गही मोरी बहियाँ।।
कौन जतन अपमान बचइहौ, परत तुम्हारे पइयाँ।।
बात गए फिर बात मिलै ना, रखियो लाज गुसईयाँ।।

(चलती)

आजु मची श्याम रंग होरी,
संग नवल राधिका गोरी।।
करन कनक पिचकारिन भरत आवै,
धावत आवत रंग डारत सबन पर।
अबीर गुलाल मुख मलत चलत,
ऐसी चपल चाल चित चोरी।।
'कृष्णानंद' हरखि निरखि सुर नर मुनि,
अमर सिहात लखि गोपिन को अनुराग।
सुरपति सारदा सराहत सुहाग भाग,
यह ब्रज सुबस बसौरी।।

(रसिया)

रसिया कों नारि बनाओं री।।
कटि लँहगा गल माँहि कंचुकी, सिर सों चुनरि उढ़ाऔ री।।
हाथन मेंहदी पाँव महावर, नकबेसरि पहनाऔ री।।
नैनन कजरा सिर पर गजरा, पायलिया पहनाओरी।।
'नारायण प्रभु' तारी बजाय कें, जसुमति निकट नचाऔ री।।

(रसिया)

छाँड़ौ छाँड़ौ श्याम मेरी बहियाँ, मैं परति तिहारे पैयाँ।।
तुम चंचल चपल गिरधारी, ब्रज रसिया अजब खिलाड़ी।।
हम अबला निपट अनारी, मेरी बारी उमरि लरिकैयाँ।।
मुसिक्याय प्रेम बस कीन्हों, मेरी नस नस को रस लीन्हो।।
पर हित बस गोरस छीनौ, सखी या ब्रज में नहि जैयाँ।।
मेरी तासे की अँगिया फारी, सारी सब टूक टूक करि डारी।।
कहाँ आनि फँसी दई मारी, यही बार बार पछितैयाँ।।

(ठड़उआ)

अरे हाँ यार, जाइ लै दै झमियाँ।
जाइ लै दै झमियाँ, झमियन पै मन लागि रहौ।।
अरे हाँ यार, जाकी गोरी गोरी बहियाँ हरी हरी चुड़ियाँ।।
आगे अँगरिया, पाछें पछिलियाँ,
बिच बँगलियाँ, दसौ अगुरियाँ,
मुदरी सोहै, बाजूबंद गाढ़े।। यार जाहि .....
अरे हाँ यार, अतलस कौं लहँगा।
अतलस कौ लहँगा, घूम घुमारौ,
लगी किनारी, ऊपर साड़ी, दस गज कौ, डंडिया।। यार जाहि...
जाइ यार बुलावै, का फ़रमावै, अरे हाँ यार जाई यार बुलावै
पान खबावै, पीक डराये, लौंगन का हरया।।
जाय बाग तमासें, जाय बाग तमासें सोरह निब्बू,
परसै शिम्भू, और कदम छइयाँ।।

(रसिया)

नैंननि में पिचकारी दई, मोहि गारी दई, होरी खेली न जाय।।
तेरे लंगर लंगराई मों सों कीन्ही, केसरि कींच कपोलनि दीन्हीं,
लै गुलाल ठाढ़ौ-ठाढ़ौ मुसिकाय।।
नैंक न कानि करत काहू की, आँखि बचावत बलदाऊ की,
पनघट सों घर लों बतराय।।
औचक कुचनि कुमकुमा मारै, रंग सुरंग सीस पै डारै,
अंग लपटि हंसि हा हा खाय
होरी के दिनन मों सों दूनों दूनों अटकै, 'सालिगराम'
कौन जाय हटकै, यह ऊधम सुनि सासु रिसाय।।

(रसिया)

तेरौ छैला गुपाल, नैननि में तकि मारै गुलाल।।
गोकुल गलियन धूम मचावै, आपु नचै और मोहि नचावै, तारी
बजाय सब आय गये ग्वाल।।

कर सोहे कंचन पिचकारी, मरि मरि सो मेरी छतियन मारी,
देखत है मेरो रूप लुभाय।।
रपटि परी हों केशरि कींचें, बे भये ऊपर हों भयी नीचें,
या ऊधम कौ कौन हवाल।। तेरौ छैला गुपाल .....

(रसिया)

आज बिरज में होरी रे रसिया, होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया।।
कौन के हाथ कनक पिचकारी, कौन के हाथ कमोरी रे रसिया।।
कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी, राधा के हाथ कमोरी रे रसिया।।
अपने री अपने घर से निकली, कोई श्यामल कोई गोरी रे रसिया।।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसर रंग में घोरी रे रसिया।।
बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ, और नगारे की जोड़ी रे रसिया।।
कै मन लाल गुलाल मँगायो, कै मन केसर घोरी रे रसिया।।
सौ मन लाल गुलाल मँगायो, दस मन केसर घोरी रे रसिया।।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, जुग-जुग जिओ यह जोड़ी रे रसिया।।

(रसिया)

मृगनैनी तेरौ यार नवल रसिया।।
बड़ी-बड़ी अंखियां नैंनन कजरा, तेरी टेढ़ी चितवन मन बसिया।।
अतलस को याको लहँगा सोहै, झिलमिल सारी मेरे मन बसिया।।
छोटी से अंगुरिन मुँदरी सोहै, याके बीच आरसी मन बसिया।।
बांह-बरा बाजूबंद सोहै, याके हियरें हार दिपत छतियां।।
रंग महल में सेज बिछाई, याको लाल पलंग पचरंग तकिया।।
'पुरूषोत्तम प्रभु' देख विवस भये, सबै छाँड़ि ब्रज में बसिया।।

(दीपचंदी)

लागे नेहा जनावना हो जसुदा के नैंना।।
हमसो नेह गेह काहू आनि सों, हमसों लागे दुरावना।।
बीती रैनि पिया नहिं आये, अंचल लागे उड़ावना।।
पान की पीक लीक अंजन की, अधरन अधिक सुहावना।
बिनु गुन बाल बाल बिन बेसरि, बाल लगे सुरझावना।।

(विहाग)

सजन तोहि मुख देखे की प्रीत।।
तुम अपने यौवन मदमाते, कठिन विरह की रीत।।
जहाँ जाउ तहँ हँसि बोलत, गावत रस के गीत।।
हरीचन्द मधुवन के भौंरा, हौ मतलब के मीत।।

(रसिया)

बटेसुर होरी खेलन आये हैं शिव पारवती के संग।
राजा भदावर ने तप कीनहों, नारी सौ पुरूष बनाये हैं।
पाठक जू नै रंग चुरायौ, शंकर रंगनि सौ हनवाये हैं।
भंग छानि शिव चालन लागे, तब कुंजन वास बनाये हैं।
विश्रान्ति बनाइ दई जमुना तट, पुनि सुन्दर घाट बनाये हैं।
उत्तर बहति जान्हवी त्यागी, जमुना पश्चिम ओर कराई हैं।
बटेसुर होरी .....

(पीलू)

गारी न देउ जसुदा के लला, होरी खेलन आए हौ तौ खेलौ भला।।
गारी देउगे गारी खाउगे, एक की लाख सुनौगे भला।।
नंद जसोदा सहित बिकैही, जो गिरि जाय मेरे कर कौ छला।।
बृन्दावन की कुंज गलिन में, दधि की दान न पै हौ भला।।
जो तुम चाहौ भलाई कन्हाई, अपनी डगर चले जाउ भला।।

(पीलू)

ऐसौ चटक रंग डारौ कन्हैया, मोरी चुनरी में परि गयो दाग री।।
ग्वाल बाल मोहि चहुं दिसि घेरैं, केहि मग जाऊँ मैं भाग री।।
अबीर गुलाल लियें भरि झोरी, हम सों मचायौ है फाग री।।
'भूधरदास' श्याम मिलि जैहैं, हरि के चरन चित लाग री।।

(पेंड़ा)

बालम बेसरिया को लटकन, छैला टोरि डारौ रे।।
लटकन टोरी गूँज मरोरी, जा सुनरा के छोरा।।
यह लटकन मेरी मात निसानी, मलिन कियौ मन मोरा।।

(काफी)

ऐसौ ध्यान धरौ री, श्याम सों खेलें होरीं।।
ग्यान कौ रंग सुरति पिचकारी, नेह गुलाल मलौ री।
द्वै मत सों पिया हाथ न ऐहैं, एकहि ध्यान धरौ री,
बहुरि मुख अबीर मलौ री।।

(काफी)

नाथ मेरा क्या बिगड़ेगा, जायगी लाज तुम्हारी।।
तुम तौ दीनानाथ कहावत, मैं अति दीन दुखारी।
जैसें जल बिनु मीन मरति है, सोई गति भई है हमारी।।
भूमि-विहीन पांडु-सुत डोलें, धरणि धरम-सुत हारी।
रही न पैज प्रबल पारथ की, भीम गदा महि डारी।।
सूर-समूह सब मिलि बैठे, बड़े बड़े व्रत-धारी।
भीषम करण द्रोण द ुःशासन, जिन मेरी अपति विचारी।।
मो पति पाँच पाँच के तुम पति, सो पति कहाँ बिसारी।
'सूर' स्याम पीछें पछितैहौ, जब मोहि देखौ उधारी।

लेद

मेरी दौरनिया, मेरी बैरनिया, मेरो मनु लगों अटरिया-2
ऐ हाँ, मेरो मनु लगों अटरिया.....2
सात डणा की धरी नसैनी... हाँ-हाँ-हाँ - अब हो-हो..
तापे चढ़ि गयो छैला-छैला-छैला
मेरी दौरनिया, मेरी बैरनिया.....

लेद

प्राणों की प्यारी कहाँ तिहारे डेरा ऐ हाँ कहा तिहारे डेरा...2
अट्टा ऊपर शेज बिछी है - हाँ-हाँ-हाँ अब हो-हो-हो
वहीं हमारे डेरा-डेरा-डेरा, प्राणों की प्यारी कहाँ तिहारे डेरा - 2

होली : पारम्परिक त्यौहार

- लोकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (फरौली/गाजियाबाद)

होली त्यौहार अपने समाज में एक विशिष्ट स्थान रखता है। वृज क्षेत्र में होली का गायन प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। जिसकी रागों का क्रम है, जो पीलू, काफी से आरम्भ होकर धमार, लेह, पैंडा, दीपचन्दी, चाल, रसिया, विहाग, भैरवी आदि रागों में गायी जाती है। होली का यह दीर्घकालीन त्यौहार माघ शुक्ल पंचमी से प्रारम्भ होकर फाल्गुनी पूर्णिमा-चैत्र कृष्ण प्रतिपदा तक चलता है।

होली गायन बसन्त पंचमी के दिन प्रारम्भ होता है और ढोलक, हारमोनियम, मंजीरें की थाप पर होली गायन के स्वर स्वतः ही उठने लगते हैंः

आयो बसन्त कहो उन हरि सों, बौरे, अम्ब बन फूली है सरसों।।
फूले कमल उमगे दोउ जुबना, गयो चितचोर कहाँ या ब्रज सों।।
औरन सों वे हँसत खिलत हैं, हम तरसें वाके दरसन बरसों।।
ऐसौ मन होय, छुड़ाय लाऊँ सजनी, मोहन प्यारे कों कुबजा के करसों।।
राह चलन दुर्लभ भयौ सजनी, अजहुँ न भेंट भई उन हरि सों।।

कृष्ण गोपियों के संयोग के शालीन चित्रण हैं इसमें, कृष्ण विरह जैसी मर्मस्पर्शी वेदना हैः

जो तुम श्याम कूबरी से राजी, कूबरी आजु कहाँ तें ल्याऊँ।।
कालिन्दी सों जल भरि ल्याऊँ, प्रेम सहित असनान कराऊँ।।
अतर फुलेल मलौं तेरे मुख पै, घिसि-घिसि चन्दन अंग लगाऊँ।।
चंदन काटि कें पलँग बनाऊँ, रेशम बाननि तै बनवाऊँ।
तोसक तकिया गिलम गेंडुआ, अगल बगल गुलसुइयाँ लगाऊँ।
कदली खम्भ विरिछ उदबुद के, बिच-बिच मौलसिरी लगवाऊँ।
नये-नये पात मँगाइ आम के, द्वारे पै बन्दनवार बँधाऊँ।

वृज की कुंज गलियों में वनमाली छिपे हैं और किशोरी जी की होली नन्द लाला को पकड़ लाती हैंः

ब्रज कुंजन में जाइ, पकरि लाई, नंद को लाला।।
हा हा करावत पैयाँ परावत, ब्रज की बाल गुपाला।
एक सखी कर पकरि नचावत, बहुत बजावत गाला।।
पाँय पैंजनी अधिक विराजै, बेंदी भाल विशाला।
बेसरि की छवि कहाँ लगि बरनौं, झूमि रही मोती माला।।
आँखिन अंजन मुख बिच मंजन, लोग कहैं ब्रज बाला।
आनि जसोमति यह छबि निरखति, मोहन मुरलीवाला।।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, खेलि रहे नंद लाला।
'सूर' श्याम छबि कहाँ लगि बरनौ, मोहि लईं ब्रजवाला।।

सृष्टि का स्वामी गोपियों के द्वारा कितना विवश है, तरह-तरह के नाच-नाच रहा है? उसे नाचने में सुख मिलता है या स्वयं नाचने में?

गारी दई और कांकर मारौ, अब कैसे घर जाउगे लला।।
कांकर मारि गली भयौ ठाढ़ौ, अबकैं बदलौ मैं लैऊंगी लला।।
छीनि लेंऊँ तेरी लकुट कमरिया, तब कैसे इठिलाउगे लला।।

होली से अच्छा अवसर और कौन सा होगा, जब ऐसा श्रृंगार किया जाय और शुभ मुहुर्त देखकर मनमोहन का वशीकरण किया जायः

साजि कैं जो चली, रँगीली खेलन होरी।।
करि सिंगार माँग मुतियन भरि, साधि चली सुधरी।
नैनन अंजन आँजि कें, मानों बाढ़ि सिरोही धरी।।
सासु बुरी घर ननद हठीली, सैयाँ ने गारी दई।
तू मदमाती फिरति ग्वालिनी, कुंजन काहे गयी।।
मैं जमुना जल भरन जाति ही, मोहन घेरि लयी।
अबकी फाग प्रिय तेरे सँग खेलौं, यह अभिलाष रही।।

तभी बेचारी मन में विसरती हैः

ऐसे कहाँ मेरे भाग, पिया संग खेलों होरी।।
काऊ सौतिन संग खेलत हुइहैं, पिया रंग भरि-भरि झोरी।
अपनी बिथा का सौं कहौं सजनी, भाग भलौ उनको री,
पिया संग खेलें जो होरी।।
जबसे पिया परदेस गमन कियौ, सुधि हूँ न लीन्हीं मोरी।
मैं बैठी यह सगुन विचारों, कब आवै बारी मोरी,
पिया संग खेलौ मैं होरी।।

तब क्यों न इर्ष्या हो, किशोरी जी के सौभाग्य से वृजराज स्वयं किशोरी जी के दास वने घूमते हैं, मुरली में पुकारते हैं, रुठने पर मनुहार करते हैं, रास रचाते हैं, रास्ता बुहारते हैं,

फूल विछाते हैं और पैरो में महावर भी लगाते हैं:

तू बड़भाग सुहाग भरी, ब्रजराज तेरे घर आवत है री।।
जो कबहूं तू मान करै, बहियाँ गहि तोहि मनावत है री।।
तोहि रिझाइ भली विधि सों, मुरली में तेरौ जस गावत है री।।
जो कबहूँ तू बन कों चलैं, पाछे सें तेरे उठि धावत है री।
तोहि लै बन में रास करै, मग झारत फूल बिछावत है री।।
सारद सेस महेस रटैं, चतुरानन ध्यान न आवत है री।
सोई अब 'सूर' भयौ बस तेरे, महावर पाँय लगावत है री।।

महाज्ञानी उद्धव के सारे तर्क कुंठित हो जाते हैं:

बहुत दिनन के रुठे श्याम, चलौ होरी में मनाय लावें रे।।
अबीर रोरी मलिकैं गुलाल म्हों मसलि कैं, गरवा लगाइ लावें रे।।
केसरि कुसुम के माटन रँग भरि भरि, फगुआ खिलाइ लावें रे।।
जुगुति-जतन सों, श्री नंद के नन्दन कों, गोदी में उठाय लावें रे।।
चोवा चंदन अतर अरगजा, रंग बरसाइ लावें रे।।

बृजराज के आते ही होली का हुडदंग शुरु:

अबकी होरी मैं खेलौंगी डटिकैं, जो श्याम आवेंगे ब्रज में पलटिकैं।।
जो श्याम मोसों बरजोरी करिहैं, गारी मैं देउँगी घुँघटा पलटिकै।।
एक कुमकुमा ऐसौ मैं मारूँ, जो बंसीवारे की आँखिन करकै।।
जो श्याम हमसों रूठि जायँगे, बिनती करौंगी मैं पकरि कै।।
मैं तो जानति नाहीं वाकौ नाम गाम,
मेरी बहियाँ पकरि लीन्ही थाम थाम।।
श्याम-बरन, बरनत न बनत मोपै,
मनहुँ कोटि छवि सिन्धु थाम।।
मंद हँसनि, दामिनी सी दसन-दुति,
पीत वसन ओढ़ें ललाम।।
कर मुरली उर में वनमाला,
सीस मुकुट अनमोल काम।
केसरि रँग छिरकौ तोरी सारी, कपोलनि कौने दियौ री गुलाल।।
मारग चलत आनि चहुँ दिसि तें, पूछति हैं ब्रज बाल।।
नहिं चितवति नहिं बोलति नेकहु, कौने कियौ यह हाल।
'राम प्रताप' कहति क्यों न साँची, तोहि मिलै नंदलाल।।

होली जैसा अवसर कहाँ मिलेगा, खुली चुनौती:

मोहन तुम जिनि ढीठ लँगर हौ, हमहूँ तुम सन अगरीं।।
हमरौ गाँव बरसानौ कहियत, तुम्हरी गोकुल नगरी।।
तुम्हरे सँग में ग्वाल बहुत हैं, हमहूँ सखियाँ सिगरी।।
तुम्हरे सिर पर मोर मुकुट है, हमरे सिर पर चुनरी।।
सजि सजि आवत है ब्रज बाल खेलन होरी, शशिबदनी मृग नैनी।
केसरिया सिर चीर बसन्ती, फूलन गूंथी है बैनी।।
बाँयौ हाथ नचावत आवत, बोलत कोकिल बैनी।
'रँगीले लाल' अँखियाँ अलसानी, झुकी हैं सावन कैसी रैनी।।

और चलिये हम सब देखें:

चलौ देखियै बरसाना, जहाँ मची रंगीली होरी।।
निकसीं भवन-भवन तें, हाथों गुलाल रोरी।
मनुहार कैसी झलकै, मानों प्रेम रंग बोरी।।
अबीर गुलाल की घुमड़नु में, पकरे है नंदलाला।
फगुआ हमारौ दीजै, हंसि माँगतीं बृज वाला।।
बाजै रबाव भेरी, ढपताल और मृदंगा।
दीनारा बीन बाजै, महुअरि मुहचंग उपंगा।।
नंदनंदन श्री गिरधारी, बृषभानु की दुलारी।
'रसखान' खेलैं होरी, चिरजीव रहे यह जोरी।।

फिर तो वर्षा कैसी कि सावन भी तरसे:

पौरी वृषभानु की, आजु रंग झर बरसै री।।
उड़त गुलाल लाल भए बादर,
बीच कुमकुमा की मूँठि, घननि जैसे दामिन दमकै री।।
खेलत हैं दामिनि धन सुन्दर,
कृष्ण रसिक संग री।
'दया सखी' फागुन के दिननि में, सावन सरसै री।।

और रंग ऐसा कि धरती अम्बर सब लाल:

लाल ही लाल भये, होरी खेलि रहे नन्दलाल।।
लाल लली ललकारि दुहूँ दिसि, उड़ि रहे लाल गुलाल।
वे उनके कंचुकि तकि मारत, वे तकि मारत गाल।।
लाल भयौ सिर पेच लाल कौ, पट जामा भये लाल।
दल समेत भयीं लाल लाड़लि, लालन के गल माल।।
लाल भयी छिति गगन लाल भये, ससि उड़गन भये लाल।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, रवि मंडल भयौ लाल।।
लाल लाल सब ग्वाल बाल भये, ब्रजवासी भये लाल।
लालन ललित लाल लखि लाला, पल फेरत भये लाल।।

देखिये यमुना तट पर हुडदंग मचा है:

हो हो कहि दौरीं, अहो ब्रज बाल।
भरि भरि घट बंशीबट के तट, दै दै ओट तमाल।।
इत सुगन्ध लियें दीनबन्धु, उत भरत भामिनी भाल।
पियत पियूष चन्द लागत मानों, खुले है व्याल के जाल।।
इत उझकत पियरौ पट पहिरैं, मानौं फूले कंज सनाल।
मुख देखत ऐसी लागति मानों, बुझि बरि उठत मसाल।।

'विद्याराम' दृगन देखत ही, मृगन भूलि गई चाल।
खेलि फग हिलि मिलि रस बस करि, घर आये नँदलाल।।
और देखिये लाडली जी ने मान क्यों करा है- रुठना और मनाना?
लाड़लि मान न करियै, होरी के दिनन में, कहा तुम्हारी बान।
बरस दिना कौ द्यौस लाड़लि, बैठी हौ भौंहे तान।।
मानि सिखावन लेहु आपनें, यह जिय में धरि ध्यान।
'गुनविलास' पिय दूरि उठि चलौ, रूप केलि की खान।।
क्यों न करे मान, देखिये कारणः
तुम भोरही आये होरी खेलन, राति कौन के रंग में रँगे हौ लाल।।
पलक पीक अंजन अधरन अरू, दियौ है महावर तिलक भाल।
'राम प्रताप' चतुर भामिनी बे, जिन मुख कियौ है गुलाल लाल।।
किन्तु इस ढीट के आगे मान भी नहीं चला और नया खेलः
श्यामा श्याम सों होरी, खेलत आजु नई।।
नन्दनंदन कों राधे कीन्हों, माधव आपु भईं।
सखीं सखा भईं, सखा सखी भए, जसुमति भवन गई।।
गोरे स्याम साँवरी राधा, यह मूरति चितई।
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढ़प, नाचत हैं थेई थेई।।
पलटौ रूप दखि माधव कौ, जसुमति चकित भई।
'सूर' स्याम कौ वदन विलोकत, उधरि गई कलई।।

हमें गर्व है अपने पूर्वजों पर जिन्होंने भविष्य को देखते हुए ''रंग झर बरसै री'' पुस्तक के रूप में अपार संग्रह दिया है, जिसका प्रकाशन सम्वत 2020, सम्वत 2046 एवं सम्वत 2066 में हुआ। तदउपरान्त प्रायः गाये जाने वाली होलियों को संजीव रूप देने के लिए ''भदावरी होली'' रंग-सरस आदि पुस्तकों का प्रकाशन हुआ।

ससुराल की होली

– **करुणा मिश्रा,** मथुरा

होली खेलन गए ससुराल लला होली खेलन गए।
टपकत तेल लगाओ जुल्फन में मेहंदी लगाए लई दाढ़ी।।
आंखों में सुरमा मुंह में बीड़ो,
अचकन जरीन की भारी
लला होली खेलन गए.....
लहँगा चुनर सलहज लाई
साड़ी लाई साली।
महावर बिंदिया सब ले आई
नर से बन गए नारी
लला होली खेलन गए.. ... .
फागुन को मदमस्त महीना
भाँग पिलाय दई भारी
साली बाँध गई पैर में घुंघरू
नाचे दै दै तारी
लला होली खेलन गये... .....
होली का हुड़दंग मचों है
शोर मच रहो भारी
एक नार ने लहँगो खींचो
एक ने कींच उछारी
लला होली खेलन गये.....
सब जग होली ब्रज में होला
ब्रज की नारी मतवाली
भीगे भीगे सोटा मारे
मीठी दै वे गारी
लला होली खेलन गये .....
होली खेलन गये ससुराल
लला होली खेलन गये.....

बसंत

– **अंबर पाण्डे,** भोपाल

भंवरे मंडराते अब फूलों पर,
हवा बहे स्वच्छंद।
कलियां महक बिखेर रही हैं,
मौसम आया वसंत।
चिडिय़ों ने कलरव शुरू किया है,
कोयल गीत सुनाती।
मोर मतवाला होके नाचे,
ऋतु वासंती भाती।
रंग-बिरंगे रंगे हैं उपवन,
छाया है आनंद।
कलियां महक बिखेर रही हैं,
मौसम आया वसंत।

होली गायन - परंपरागत रसिया

- श्रीमती उषा भरत चतुर्वेदी, भोपाल

आ गया फागुन मास ढोलक की थाप, मंजीरे और झांझ की मधुर ध्वनि के साथ होली गायन का मौसम। होली राग रंग का लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। संगीत और रंग इसके प्रमुख अंग हैं। होली गायन की परंपरा बसंत पंचमी से प्राचीन काल से है। बसंत पंचमी से फाग और धमार का गायन प्रारंभ हो जाता है। होली का त्यौहार हमारे देश में भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न प्रकार से मनाया जाता है। लेकिन मथुरा की पारंपरिक लठमार होली पूरे देश में प्रसिद्ध है। मथुरा तथा वृंदावन में 15 दिन तक होली का त्यौहार मनाया जाता है, साथ ही में होली का गायन भी। रसिया ब्रज क्षेत्र का लोकगीत है। जिसमें भगवान कृष्ण तथा राधा एवं गोपियों के संग होली खेलने का वर्णन होता है। रसिया में हास्य एवं व्यंग का पुट भी देखने को मिलता है। रस की दृष्टि से यह श्रृंगार रस प्रधान होता है। भक्ति रस के रसिया भी उपलब्ध हैं। यथा...

खेले मसाने में होली : वियोग श्रृंगार रस में भी रसिया में देखने को मिलता है, मैया कैसे लामें धीर प्राण दर्शन को भटक रहे

जब तैं धोको दैकें गयौ, काउ के संग नाहि खेली होरी।।

यदि हम वर्तमान समय की बात करें तो रसिया का विकृत रूप आज हमें देखने और सुनने को मिलता है। जिन्हें परिवार के साथ बैठकर सुना भी नहीं जा सकता। हमारे जो परंपरागत रसिया तथा होली हैं,उनको हम सुरक्षित रखें एवं साथ ही में उनका प्रचार-प्रसार भी हो। हमारे समाज में होली गायन की समृद्ध परंपरा है। चतुर्वेदी के सभी गांव में प्रत्येक राग में होली गाई जाती है। यथा - मथुरा में रसिया, पुरा, तालगांव में लेद, होलीपुरा में धमार, चन्द्रपुर में ठ्डउआ, तरसोखर में जकड़ी, मैंनपुरी में काफी राग में गायन होता है। शास्त्री संगीत में 25 रागों में गायन होता है। हमारी पारंपरिक होलियां प्रायः सभी रागों में उपलब्ध है। जिनमें रसिया एक प्रमुख राग है।

रसिया की मुख्य होलियों में से कुछ निम्नानुसार हैः

1. उठ मिलि लै राम लखन आए,
उठ मिलि लै।।
रामहुँ आये लखनहू आए,
मातु जानकी संग लाए ।।
रावण मारि बाकी लंक उजारी
राज़ विभीषण दै आए।।

मकुना हाथी जापै जरद अम्बारी,
हनुमत चंवर ढुरत आए।।
तुलसीदास आस रघुवर की,
अवध पुरी आनन्द छाये।।

2. चलौ सखि आजु खेले,
होरी कन्हैया घर।।
अपने री अपने भवन सें निकसी,
कोऊ साँवरि कौऊ गोरी।।
एक तें एक जोबन मदमाती,
सब ही उमरि की थोरी।।
चोया चदन अतर अरगजा,
कोउ गुलाल भरि झोरी।।
चपल ढीठ चपला सी चमके,
झमकति बदन मरोरी।।

3. गिरधारी पिचकारी मोंरे कयों मारी रे,
निपट अनारी मोरी आँखिन में।।
बरजि जसोदा अपने लाल को,
क्यो नाहि रारवति आँखिन में।।
चोवा चन्दन अतर अरगजा,
अबीर भरे दोऊ कॉखनि मे।।
चन्द्र सखि भजु बालकृष्ण छबी,
लखि लीनौ मैंने लाखन में।।

4. मथुरा की कुंज गलिन में,
होरी खेलि रहे नन्दलाल।।
पूरब में राधा प्यारी,
पश्चिम में कृष्ण मुरारी,
उत्तर दक्षिण, गोपी ग्वाल।।
उन भर पिचकारी मारी,
नई सारी सुघर बिगारी,
मुख मल दियो अबीर गुलाल।।
नए रंग के हौद भर आए,
छकरन में अबीर लदाये,
यहां माचो नवेलो फाग।।
मथुरा की कुंज गलिन में।

5. रसिया कों नारि बनाओं री।।
कटि लहंगा गल माहि कंचुकी,
सिर से चुनरि उढ़ाऔ री।।
हाथन मेंहदी पाँव महावर,
नक बेसरि पहनाऔ री।।
नारायण प्रभु तारी बजाय के,
जसुमति निकट नचाऔ री।।
रसिया को नारि बनाऔ री।।
6. कब से तुम छैल बने रसिया।।
वन वन धेनु चरावत डोलत,
हाथ लकुट अरू कटि कछिया।।
गुलवैगी कोऊ गाल गुलगुले,
लाल लाल ओर किस मिसिया।।
कब से तुम छैलबने रसिया।।
7. छाँड़ो छाँड़ो श्याम मेरी बहियाँ,
मै परति तिहारे पैयाँ।।
तुम चंचल चपल गिरधारी,
बृज रसिया अजब खिलाडी,
हम अबला निपट अनारी,
मेरी बारि उमर लरिकैयाँ।।
मुसकाय प्रेम बस कीन्हों,
मेरी नस नस को रस लीन्हों,
परहित बस गोरस छीनो,
सखी या बृज में नही जैयाँ।।
मेरी तासे की अँगियाँ फारी,
सारी सब टूक टूक करि डारी,
कहाँ आनि फँसी दई मारी,
यह बारबार पछितैयाँ।।
8. मत डारो लाल गुलाल मत डारौ।।
बरजोरी न करौ बृज ,रसिया,
खेंचो न चीर हमारौ।।
बरजोरी करत मुरकि जाय
बहियाँ टूट जाय खाँगवारो।।
राम सखि की यही वीनती,
घूँघट पट ना उघोरौ।।
मत डारौ लाल गुलाल मत डारौ।।
9. होरी आई रे नन्द के घर भैया।।
कैसी गोरी कैसो रसिया,
कैसो पलंग कैसा तकिया।।
सांवली गोरी गोरो रसिया,
लाल पलंग, पचरंग तकिया।।
रूठ गई गोरी रूठ गयो रसिया,
रोवे पलंग सिसके तकिया।।
मान गई गोरी मान गए रसिया,
हांसे पलंग खेलकै तकिया।।
होली आई रे नंद के घर भैया।
10. ब्रज मंडल देस दिखाओ रसिया।।
तेरे बृज में गौउये बहुत है,
पीपी दूध, भई पठिया।।
तेरे ब्रज में मोर बहुत हैं,
कूकत मोर फटे छतियॉ।।
तेरे ब्रज में ज्वार बाजरा,
हरी हरी मूंग उड़द कचियां।।
बृज मंडल देस दिखाओ रसिया।।
11. मैं तो मलौंगी गुलाल तेरे गालन मैं।।
मलि गुलाल आँखे ऑजोगी,
चोटी गुहोगी बालन में।।
आज कसक सब दिन की निकसै,
बेदी दै तेरे भालन में।।
हरिश्चन्द्र तोहि पकरि नचाऊँ।,
मीर बनूं बृज बालन में।।
मैं तो मलौंगी गुलाल तेरे गालन मैं।।
12. होली खेलन आयो श्याम,
आज जाए रंग में बोरो री।।
कोरे कोरे कलश मंगाए,
बा में केसर घोरो री।।
रंग बिरंगो करौ,याको,
कारे से गौरो री।।
पार परोसिनी सब मिलि कें,
आँगन में घेरो री।।
राधा जी के करौ निहोरे,
तब जाय छौडो री।।
हरे बाँस की बाँसुरियाँ ,
जाहि तोर मरोरो री।
तारी दें दै जाहि नचावौ
अपनी ओरौरी।।
चन्द्र सखी की यही बीनती,
जब करै निहोरो री।
हा हा खाय परै जब पैया,
तब जाहि छोरे री।।
होरी खेलन आयो श्याम आज जाहि रंग में बोरो री

ज़िंदगी का ये पड़ाव...

– **अरुणा चतुर्वेदी**
(ग्वालियर, होलीपुरा)

बोझिल कदमों से,
थकी हुई सांसों से,
ज़िन्दगी का ये पड़ाव !
कठिन ज़रूर है,
पर मुश्किल भी नहीं!
अगर आत्मबल साथ हो!!

सन्ध्या के गहराते अंधकार में,
जब दिए की लौ धूमिल पड़ जाए,
तो दो कदम भी चलना,
कठिन ज़रूर है!
पर मुश्किल भी नहीं!!
अगर मन में विश्वास हो!!

संघर्षों को झेल- झेल,
जब टूट चुका हो अंतर्मन,
कड़वे घूंटों को पी जाना,
कठिन ज़रूर है!
पर मुश्किल भी नहीं!!
अगर संकल्प साथ हो!!

जीवन की इस उहापोह में,
हार चुका हो ये तन मन,
चेहरे पर मुस्कान,
कठिन ज़रूर है!
पर मुश्किल भी नहीं!!
अगर अपनों का साथ हो!!

होली की मस्ती विजिया की तरंग

- भरत चतुर्वेदी, अचल (होलीपुरा/ रिसड़ा)

होली का त्यौहार तो उल्लास, उमंग, रंग गुलाल के मध्य होरी गायन व वादन के जोश और आपसी मेल मिलाप का ही तो पर्व है। उमंग और उत्साह भांग ठण्डाई से रंग, गुलाल को दोगुना कर देती है। यह सब हो तब ढोलक की थाप पर होरी गायन के स्वर स्वतः ही गुंजायमान हो उठते हैं।

आयौ बसंत कहौ उन हरि सौं
बौरे अंब बन फूली सरसौं।।

और फिर एक दूसरे के गले मिलने का सिलसिला शुरू हो जाता है। इनमें किसी एक की भी कमी उत्साह को कम कर देती है। प्रश्न उठता है भांग की अनिवार्यता का,अगर भंग की तरंग हो तभी लगता है कि

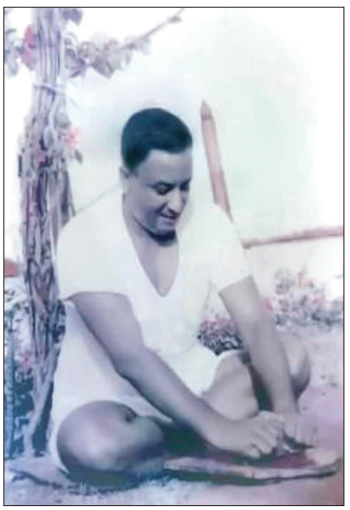

महकी महकी हर गली, बहका बहका ढंग।
है तरंग यह भंग की,या मौसमी उमंग।।

भांग की बात सुनकर बहुत से लोग यह आरोप लगाएंगे कि मैं नशे की प्रवृति को बढ़ावा दे रहा हूँ, क्योंकि हम भाँग के गुणों से अनजान हैं। हम इसे सिर्फ नशा की वस्तु के रूप में ही जानते है, जबकि ऐसा नहीं है। भाँग का नाम आते ही नशे की मानसिकता बन जाती है। इसके दूसरे पक्ष को जानने का प्रयास ही नहीं हुआ। जबकि कहा जाता है कि

गंग भंग दो बहन हैं, रहें सदा संग।
जिन्दा तारन भंग है,मुर्दा तारन गंग।।

भांग का पौधा स्वतः उत्पन्न हो जाता है जो विषाक्त वातावरण को समाप्त कर देता है। यह जहां उत्पन्न होता है। विशेषकर उत्तर भारत एवं अन्य प्रदेशों में,वहां के वायुमण्डल को शुद्ध कर देता है।इसके सेवन से हमारे शरीर के विषैले तत्व भी नष्ट हो जाते हैं।आयुर्वेद में भांग को औषधि के रूप में माना गया है। भांग मन की एकाग्रता के लिए अचूक औषधि है। तभी तो भगवान शंकर भी यह बूटी लेकर साधना करते हैं। यह साधक की प्रिय बूटी है। इसके गुणों का बखान करते हुए फरौली निवासी गौरीशंकर चतुर्वेदी, मुनिया जी सुनाते हैं–

लडक़ा जो पीये, लडिक़ाई करै। बूढ़ा जो पीये, झक मारन कौं।।
ज्वान पीये ओ, अलमस्त रहे। कामिनि के मन भावन कों।।
गौरी कहें पति शंकर सौं। विजिया मति देओ गंवारन कौं।।
थरिया भर भात के खावन कौं। सूखे ही रोट चखावन कौं।।

लेकिन कुछ लोगों ने इसे नशे से जोड़ दिया है। किसी भी चीज का अतिरेक वस्तु के गुणों को नष्ट कर हानि का कारण बन जाता है। यह बात भांग के विषय में सत्य भी साबित होती है। नशे के बाजार में इसको रगडक़र चरस बनाई जाने लगी है। परिणामस्वरूप सरकार की ओर से इसे निषिद्ध किया गया है। इसका अत्यधिक प्रयोग बल हरने वाला होता है। उत्तर भारत में इसका अत्यधिक प्रयोग नशे के रूप में ही किया जाता है, जो सर्वदा अनुचित है। भांग छानने का चलन अपने समाज और मथुरा में देखा जा सकता है।तभी तो भाँग छानने वाले बड़े ही गर्व से कहते हैं कि –

छान छान किसी की मत मान।
जब निकल जायेगी जान तो कौन कहेगा छान।।

और तो और जब कोई इन्हें नशेड़ी कह दे तो ये धमकी भी देने से भी नहीं चूकते हैं –

जो बिजिया की करै बुराई। बाय खाय कालिका माई।।

वे यहीं तक नहीं रूकते हैं और कुदृष्टि वालों को अभिशाप तथा सराहना वालों को आशीर्वाद देते हैं–

जो हमें देखे घूर घूर, बाये खाये महिषासुर।
जो हमें देख सुहावे, वो दूध मलाई खावै।।

और जब बनकर तैयार हो जाती है तब यही कामना करते हैं कि

ऐसी आवै हर गुन गावै । हाथी के हौदा पै श्रीकृष्ण नजर आवै।।

भांग प्रेमी तो इसे भांग या विजिया कहने पर भी आपत्ति करते हैं–

भांग कहे सो बाबरो, विजिया कहे सो जरूर
याकौ नाम कमलापति, रहें नैन भरपूर।।

अब भांग और चौबे समाज की बानगी देखिए–

लड्डूअन के दरवाजे, बालूशाही के किले,

बरफिन की मुंडेरे, इमरती के कंगूरे,
रुच रुच के बनाए।
कहे कवि बिहारी लाल,और कौन आवे काम?
ऐसे गढ़ तोड़ोवे को चौबे जी बनाएं।
ना हमसे होगी, ना तुमसे होगी,
ना रंग से होगी, ना रम से होगी,
चौबेजी की होली, बस भंग से होगी।

भांग के बारे में कहते हैं कि यह कब्ज नाशक है भूख को बढाती है आदि। आयुर्वेद के वर्तमान धन्वन्तरि आचार्य बालकृष्ण जी के अनुसार भाँग का पौधा औषधि रूप में बहुत उपयोगी है। यथा कान के दर्द में इसकी पत्तियों के रस की दो दो बूंदें कान में डालने से तुरंत आराम मिलता है। अनिन्द्रा की शिकायत होने पर इसका चूर्ण सूंघने भर से नींद आ जाती है। पांच ग्राम भाँग की पत्तियाँ तथा एक दो ग्राम सर्प गंधा मिलाकर चूर्ण बनाकर एक ग्राम चूर्ण लेने से नींद आने लगती है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि यह हम पर निर्भर करता है, कि हम भाँग का किस रूप में प्रयोग करते हैं। अब होली को ही ले लें। कुछ लोगों ने इसे नशा का पर्व बना दिया है। सुबह से ही शराब के नशे में चूर हो होली पर्व को ही बहकते नजर आते हैं। जबकि होली तो हंसी ठिठौली, रंग गुलाल एवं होरी गायन के जोश का पर्व है।

सही मायने में कवि प्रेम शंकर त्रिपाठी ने होली को निम्न पक्तियों में सटीक रूपायित किया है कि –

ढोलक की गमक में, युवकों की चहक में।
वृध्दों की बहक में, भंग का निखार है।।

होली का पर्व

- श्री तुंगनाथ चतुर्वेदी, मथुरा

प्राकृतिक,सामाजिक,सांस्कृतिक धार्मिक
सत्व रज तम त्रिगुणों का पर्व होली है।
खेतों,खलिहानों में,नुक्कड़ चौपालों पे,
महलों,मंदिरों में फाग मचाने का पर्व होली है ।।
जड़ता को जलाने और धूल को भी चन्दन की तरह
मस्तक पर लगाने का पर्व होली है ।।
गर्माहट की चाह मिटी, शीतलता की चाह बढ़ी
ऋतु परिवर्तन का संकेत पर्व होली है ।।
हेमंत शिशिर की ठिठुरन से मुक्ति मिली
बसंत ऋतुराज के स्वागत का पर्व होली है ।।
पतझड़ी वृक्षों में,नव कोपलों के रंग भरे
प्रकृति के संजने संवरने का पर्व होली है ।।
आमों की बौर लादे हरी हरी अम्बियाँ सजी
कोयल जब कूकन लगे जानो तब होली है ।।
खेतों में फूली सरसों,अंगड़ाई लेत है,
बासंती बयार में,सुगंध भरे होली है ।।
गूझा, ठौर,मठरी,माजूम,ठंडाई,शर्बत,
चन्दन,इत्र,फूलों से,आदर का पर्व होली है ।।
ढोल, ढप, बांसुरी के ठाठ चौपालन सजें
संग संग तान गवें,जानो तब होली है ।।
होरी,धमार,राग चैती जब गूंजन लगें
मन में उमंग भरने का पर्व होली है ।।
हास्य और व्यंग्य,जब उपजें जन मानस में,
अनबोले ही बोलें और करत ठिठोली हैं ।।
वैर और विकार मिटें,परस्पर विश्वास बढे
जीवन में कलाएं,जीवंत हों तब होली है ।।
केसर की कमोरी,भरी गोरी बरजोरी करें
लालन के गालन,गुलाल मलें होली है
होली संदेश
आज के तनाव ग्रस्त जीवन में,
प्यार के रंग भरने का नाम होली है ।।
रूटों को मनाकर अपना बनाने का और
अपरिचितों को परिचित बनाने का पर्व होली है ।।
दुखों को भूलकर,सुखों को बाँटने का
अमृत पिलाने,इर्ष्या पी जाने का पर्व होली है ।।
मान अपमान भूल दूरियां मिटाकर के
संयोग वियोग की संवेदनाओं क पर्व होली है ।।
अनेकता में एकता,पिरोने का कार्य करे
साहित्य,संगीत,संस्कृति की त्रिवेणी का पर्व होली है
होली के स्वरूप का यथार्थ समझो,प्यारे मित्रो
भारतीय संस्कृति की अस्मिता का पर्व होली है

होली के रंग, मैनपुरी के संग

- हरस्वरूप पांडे "हरेश", मैनपुरी

टेसू के रंग चुए, सतरंगी मेह झरे,
तन मन सराबोर,जिया उमंगतु है।
धक धक जियरा डराई,धार नैन परि ना जाइ
तऊ मझधार जाइ हिया ठुमकतु है।
तबलन पै थाप परे, तान मतवारे भरे,
भंग की तरंग बीच, कोई मटकतु है
होली पे मैनपुरी चलो अब मेरे यार,
बाहिर रहीवे पे अब मन भटकतु है।

होली की चर्चा हो और मैनपुरी की यादों की मन में तरंगे न उठे। ऐसा कैसे हो सकता है। कोई पूछे ऐसा क्या है, तो कहूंगा ज्यों गूंगे मीठे फल को रस अंतर्गत ही भावे। अलग-अलग रस होली खेलना, होली गाना, भंग छानना, सब की विशेष परंपरा में बंधी व्यवस्था में अव्यवस्था का घालमेल। फिर पुरानी यादों के बीच नई परंपराएं भी। कोई सराहै, कोई गारी देइ।

होली खेलना

मैनपुरी में होली खेलने का विशेष तरीका है। मैघजीन,डोल्ची, फुहारे,टेसू के रंग, दूसरे रंग, गुलाल, फुचाड़ा। अलग अलग समय, अलग अलग तरीका। मेघजीन यह जल युद्ध है। इस नाम का उद्भव कैसे हुआ, कौन जाने। जल और मेध का तो कुछ साम्य है, लेकिन ''जीन'' कहां से आया। यह शोध का विषय है। इस युद्ध में गोलियों के स्थान पर जल एवं बंदूक के स्थान पर (पिचकारी) पिचक्का। पिचकारी कुछ बचकानी चीज लगती है पिचक्का से मालूम पड़ता है। जैसे कोई हट्टा कट्टा जवान युद्ध के लिए तैयार।

इस युद्ध का पलासी का मैदान निश्चित है जो दो मोहल्लों मिश्राना व चौथियाना की सीमा पर स्थित है। दोनों मोहल्लो के बाल, युवा, वृध्द हाथ में पिचक्का नामक बंदूक लिए एक दूसरे को युद्ध के लिए ललकारते। मिश्राना घबड़ाना है,चौथियाना घबड़ाना है, युद्ध स्थल पर पहुंचते हैं। पिचक्को में जल भरकर दूसरों के नाक, कान,आंख के अंदर घुसी दुव्रति का शमन करते हैं। जलधार के अतिरिक्त कोई रंग अथवा शारीरिक बल का प्रयोग सर्वथा वर्जित है। जैसे आजकल केमिकल युद्ध वर्जित है। वैसे ही शुद्ध जल के अतिरिक्त कोई रंग का प्रयोग वर्जित है, क्योंकि रंग के प्रयोग से बजाय दुवृर्ति के आंख,नाक,कान के ही शमन होने की आशंका रहती है। अतः इसके प्रयोग पर आणविक युद्ध न हो जाए। इसकी आशंका रहती है।

इस युद्ध के लिए कई व्यवस्थाएं करनी पड़ती है। जैसे ड्रमो में अपनी सेना के लिए जल की व्यवस्था। पिचक्कों की मरम्मत आदि। आजकल ड्रमो में समर चलाकर पाइप से जल भरा जाता है। पहले कुंओं से पानी भरा जाता था।अतः लगातार जल की पूर्ति करना आवश्यक है।युद्ध की तरह अलग- अलग टोली होती है। एक टोली जल पूर्ति के लिए। एक पिचक्को की मरम्मत के लिए। डाट बांधने के लिए और बाक़ी फ्रंट पर युद्ध के लिए। कोई कुंओ से जल भरता। कोई बाल्टी से ले जाकर जल कुंओ में डालता।कोई पिच्चको की मरम्मत करता। सब के विशेषज्ञ अलग-अलग। फ्रंटियर के योद्धा अलग। जिसने साल भर सौ दंड बैठक नहीं लगाई है। वह पाँच मिनट भी फ्रटियर पर न टिके। क्योंकि

मैनपुरी में होली खेलने का विशेष तरीका है। मैघजीन,डोल्ची, फुहारे,टेसू के रंग, दूसरे रंग, गुलाल, फुचाड़ा। अलग अलग समय, अलग अलग तरीका। मेघजीन यह जल युद्ध है। इस नाम का उद्भव कैसे हुआ, कौन जाने। जल और मेध का तो कुछ साम्य है, लेकिन "जीन" कहां से आया। यह शोध का विषय है।

अगर आपके शरीर का प्रत्येक अंग बराबर फुर्ती से हिलडुल नहीं रहा। कभी तिरछे झुके,कभी बैठक सी मारी,कभी सिर को इधर-उधर ऊपर-नीचे नहीं किया तो विरोधी के पिचक़्क़ो की तीखि धार आपको कान,नाक या आंख में बैठी और वहां से आप की दुरवृति निकल बाहर और आप रणछोड़। अच्छा योद्धा दो-तीन घंटे युद्ध करने में सक्षम होता है। फुर्ती से हिलते डुलते हुए भी अपने बड़े पिचक्के की प्रखर धार से विरोधी पर सटीक प्रहार करने में सक्षम होता है। अच्छे योद्धा को विरोधी घेरकर परास्त करने में व्यस्त रहते है। उसके साथ ही तुरंत उसकी सुरक्षा को तत्पर,गरजते स्वर से एक दूसरे को ललकारते। लगै लगै धवक है, धवक है। जैसे कबड्डी की ताल दे रहे हो मिश्राना घबड़ाना है,चौथियाना घबड़ाना है, के उद्घोष। यहां जल ही युद्ध की रसद है। कभी-कभी दूसरे दल के बाल्टी से पानी लाने वालों को घेरकर

रसद का हनन करने का प्रयास, युद्ध का पूरा दृश्य।

हथियारों की तरह पिच्चकों की भी प्रसिद्धि है। जैसे इल्ले बच्चें का पिच्चका। इसमें एक घड़ा पानी आता था। पेट पर अंगोछा बांधकर मूठ पेट पर लगा दोनों हाथ से सामने पकड़ कर चलाया जाता था। पीतल के बड़े-बड़े पिच्चके तोप की तरह प्रसिद्ध है। कोई घन गरज, कोई बिजली, कोई अपनी धार के लिए प्रसिद्ध है। कोई अपने प्रहार के लिए। ऐसे विशेष पिच्चकों के युद्ध स्थल में प्रवेश होते ही विरोधी दल विशेष टुकड़ी बना योद्धा को घेरते, परंतु वह तो महाराणा प्रताप की तरह मुगलों पर भारी पड़ता। यह युद्ध सुबह 10:00 बजे के लगभग आरंभ होता एवं भगवान की सवारी के वहां पहुंचने पर समाप्त की घोषणा हो जाती। मेघजीन का खेल अपने में अनूठा है।

डोलची व फुचारा : डोलची एक टीन का विशेष आकार का बना डब्बा होता था। इससे जल प्रहार के विशेषज्ञ अलग होते थे। इसके एक ही प्रहार में दिन में तारे दिखने लगते। इसका नियम यह था कि चतुर्वेदी समाज के किसी व्यक्ति पर इसका प्रयोग निषिद्ध था। यह केवल अन्य जाति के लोगों पर होता था। जिन्हें पाऊ कहकर पुकारा जाता था इसका स्थान लाल मठिया होता था। तथा समय सुबह मेघजीन आरंभ होने से पहले। जल की व्यवस्था वहां स्थाई बनी हौद (पानी की टंकी) में होता था। फुचारा : गंदा कपड़ा पानी में भीगा शराबियों को मारा जाता, लेकिन इसका प्रयोग बहुत कम था। बुजुर्ग इसके प्रयोग को रोक देते थे।

किले में होली – किले के एक प्रांगण में बहुत बड़ी एवं गहरी होद में पानी भरा जाता था। यहां ओपन टू ऑल था। सभी समाज के लोग यहाँ टोली बनाकर एकत्र होते। एक दूसरी टोली पर डोलची, पिच्चकों से प्रहार व पकड़ कर हौद में फेंकने का प्रयास करते। यँहा केवल समर्थ युवक की टोली बनाकर जाते थे। अब यँहा की होली बंद हो चुकी है।

ठाकुर जी की यात्रा : पूर्णिमा के दिन यहां के दाऊ जी के मंदिर से भगवान की सवारी पालकी में होली खेलने निकलती है। वँहा से गणेश गुर्ज के मंदिर तक जाती है। वहां भगवान रात्रि विश्राम करते हैं। पड़वा को वहां से उसी मार्ग से वापस दाऊजी के मंदिर पहुंचते हैं मार्ग में प्रत्येक घर पर टेसू के फूलों से बने रंग को ड्रमों में भर कर रखा जाता है। प्रत्येक घर के सामने खड़े होकर होली गायन होता है, और उन पर लगातार टेसू के रंग की बरसात होती है। प्रत्येक रंग में सराबोर सवारी जब मैघजीन स्तर पर पहुंचती है तो मेघजीन समाप्त होने की घोषणा होती है। और वँहा के लोग भी ठाकुर जी की सवारी में शामिल होते हैं। दूसरे दिन जब भगवान की सवारी वापस निकलती है, तो भगवान की पालकी के पीछे के स्थानों पर रंग चलना बंद हो जाता है, जबकि पालकी के आगे की स्थानों पर धुआंधार रंग चल रहा होता है। इसी तरह जब पालकी वापस मंदिर में प्रवेश करती है, तो पूरे शहर में रंग चलना बंद हो जाता है।

रंगों के चलने का एक विशेष क्रम व स्थान है। शिवरात्रि को चंदेश्वर शिव मंदिर में होली गायन के समय गुलाल का टीका। एकादशी को मंदिर श्याम सुंदर में होली गायन एवं भगवान श्याम सुंदर पर फूलों से बने रंग का चांदी की पिचकारी की फुहारों से भगवान का अभिषेक होता है।उसी दिन बारहजी मंदिर से भगवान की सवारी का मोहल्ले में भ्रमण एवं गुलाल व रंगों के छिडक़ाव का प्रारंभ होता है। छोटे-छोटे फुहारों में सुगंधित रंग से फुहार का प्रयोग व गुलाल का प्रयोग किया जाता है, लेकिन यह रंग केवल मंदिर में एकत्र लोगों पर ही डाला जाता था। अन्यत्र नहीं। एकादशी से पूर्णिमा तक इन रंगों का प्रयोग धीरे धीरे बढ़ता था। फिर पूर्णिमा व पड़वा को धुआंधार रंग होता है।

होली गायन : मैनपुरी में होली गायन में हारमोनियम, तबला व वाद्य यंत्रों का प्रयोग विशेष रूप से होता था। इसके अतिरिक्त वादक की उपलब्धता पर बांसुरी, मंजीरा, पखावज, ढप आदि भी बजाये जाते थे। गायन में राग काफी, पीलू एवं बिहाग प्रमुख हैं। जो भजन शैली में गाए जाते हैं।

होली

अनुराग के रंग रंगी रसना,
बसना कछु है गुन गायौ करें।
नित मंगल मोद मनायो करें,
रस-सिंधु में डूबी अन्हायों करें।
कबौं चंग उपंग उछंग भरियों,
ढप, झालर, झांझ बजायो करें।
भरि लाल गुलाल की मूँठ सुलाल पे
झोरी अबीर की नायौ करें।।

फागुन

– गजेंद्र नाथ चतुर्वेदी

फागुन आयो सुकूकति केवलिया,
रंग आँगरन लौं दहको री।
किंशुक जाल पलाश के पुंजन,
मंजू मधुबन पर लैहको री।
जीवन मूरि तिहारे बिना,
ये प्रभाउ घनों ब्रज में बगरोरी।
कानन कानन में उतै तौ,
इतें प्रानन ही में बरें लगी होरी।।

होली

– **पं रूप नारायण चतुर्वेदी** '' निधिनेह''

अनुराग के रंग रंगी रसना,
बसना कछु है गुन गायौ करें।
नित मंगल मोद मनायो करें,
रस-सिंधु में डूबी अन्हायों करें।
कबौं चंग उपंग उछंग भरियों,
ढप, झालर, झांझ बजायो करें।
भरि लाल गुलाल की मूँठ सुलाल पे
झोरी अबीर की नायौ करें।।

होली

– **गजेंद्र नाथ चतुर्वेदी**

झालर झाँझ मृदंग बजै,
उमहौ रस रंग मची चहुँ होरी।
चंदन चोबा फुलेल की कींच,
उलीचत सीस तै ढारि कमोरी।
ता समैं री इन उनकी ,
सहसा जुरी दीठि परी है ठगोरी।
लाल गुलाल गहैं के गहैं रहे,
बाल के गालन पै रची रोरी।।

होली के छंद

– **वरुण चतुर्वेदी, जयपुर**

(1)
होरी? में स्याम नें बांह गही,
कहे आज खिलाऊँगौ मैं तोहि होरा।
खूब गुलाल मली मुख पै,फिर जोर सों मोहि दये झकझोरा।
अंक में मोहि भरयौ तौ खिंचे,
सखि आँखिन में मेरे लाज के डोरा।
खेंचि गयौ है मेरे हिय पै,निज चित्र बिचित्र अहीर? कौ छोरा।
(2)
मैं निकसी घर सों सखि आपुने,नंद के भौन मचाओंगी होरी।
मारग बीच मिल्यौ छलिया,मुसकाय कही कहाँ जात री छोरी।
देखें लग्यौ नख सों सिख लों टक, प्रीति के रंगनि ऐसी मैं बोरी।
चौंटि कें गाल भज्यौ नंदलाल,पुकारत है गई है गई होरी।
(3)
स्याम पै रंग चढ़ावन कों,निकसीं मिलि कें ब्रजधाम की गोरी।
काहू नें रंग लये कर में,अरु काहू गुलाल भरी निज झोरी।
देखि कें रूप ठगी सी रहीं,गत ऐसें भई जैसें चंद्र चकोरी।
आगें बढ़ै नहिं पाछें फिरै डग,भूलि गईं सब खेलिबौ होरी।
(4)
स्याम सों खेलन होरी चलीं सखि,राधिका नें बहुरूप बनायौ।
गालन पै दोऊ पोतिहें खूब,जे सोचि कें हाथ में रंग दबायौ।
मोहनि सूरत देखी जो स्याम की,रीझि गईं मन सांवरौ भायौ।
हाथ कौ रंग तौ हाथ में रह गयौ,स्याम कौ रंग हिये में समायौ।

होली है

– **हास्य रसावतार,** जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

गई दिवाली आई होली, घर घर मे मची ठठोली।।
भर भर कर लाओ रंग की झोली, होली है भई होली है।।
मिंटो गए औ हार्डिज आये, नये नये हैं फूल खिलाये।।
बंगालेमें बजे बधाये, होली है भई होली है।।
आये राजा, आईं रानी, चली गयी दिल्ली राजधानी।।
कलकत्ते की मर गई नानी, होली है भई होली है।।
बंगालेके दोनों पाट, जोड़ गए देखो सम्राट।।
बने सुरेन्दर पूरे भाट, होली है भई होली है।।
घोष महाशय मोतीलाल, हुआ अजब है उनका हाल।।
नाचें नाच सभी बेताल, होली है भई होली है।।
गया उड़ीसा, गया बिहार, मचा बंग में हाहाकार।।
बाबू रोये जार बेजार, होली है भई होली है।।
पटनेपर आई है रंगत, मुसलमान की बैठी पंगत।।
बंगालेकी छूटी संगत, होली है भई होली है।।
सबसे बड़ा लंठ है दादा, भोला भाला सीधा सादा।।
जैसा कीचड़ वैसा कादा, होली है भई होली है।।

- सामयिक (सं0 1968)

– **स्व0 किशोरी चतुर्वेदी** (मलयपुर)

आजु घनश्याम, बलराम, ब्रज – बाम मिलि,
ब्रज उमंगाई नव आनँद तरंग है।
कोऊ भरि झोरिन उड़ावत अबीर, कोऊ –
गावत सुराग कहूँ बाजत मृदंग है।।
दौरि ब्रज बाल नंद लाल के सुभाल पै लै,
मलत गुलाल लाल कीन्हों सब अंग है।
जाकौ पार पायौ ना गिरीस औ मुनीस आदि
सोई प्रभु ब्रज में मचायौ फाग रंग है।।

रामायण - होलीकाण्ड

- हास्य अवतार पं. स्व. जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

जेहि सुमिरत सिध होय, माल खबावै पेट भर।
छानहु नित ही सोय, भंग सदा सुखदायिनी।।
मूक होहिं वाचाल, पंगु चढ़ै ऊँचे महल।
जासु पिये तत्काल, होली अति नीकी लगे।।
जामवंत के वचन सुहाए।
खेलत फाग सकल जुरि आये।।
नाचत कूदत पढ़त कबीरा।
कुम्भ करन आवत रनधीरा।।
आग चले बहुरि रघुराई।
पाछे लरिकन धूरि उड़ाई।।
हरिजन जानि प्रीति अति बाढ़ि।
अबीर गुलाल मल्यौ धरि डाढ़ी।।
अगर उलीचौ पानी मैला।
भागों तुरत तजों यह सैला।।
निज कबीर केहि लागि न नीका।
सरस होइ अथवा अति फीका।।
अबिर गुलाब रंग बहु नाना।
भरि भरि भार कहारन आना।।
ढोल, धमार, झांझ, डफ, नारी।
होली में अति लागत प्यारी।।
घुस बैठौ सबके घर माहीं।
मूँदहु आँख कतहुँ कोउ नाहीं।।
औरहु करहु अनेक प्रसंगा।
नाच कूद हुल्लड़ अरु दंगा।।
राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम।
जी महँ आवै सो बको, मुँह से खोलि लगाम।।
नाच कूद धन फूकैं सारा।
तुरत होहिं भवसागर पारा।।
कोट बूट पतलून पिन्हाई।
सबहिं नचावत राम गुसाई।।
उछली पगिया हाथ न आई।
चले राम धरि सीस रज़ाई।।
कारन कवन नाथ नहिं आये।
कहुँ घूँघर में राह भुलाए।।
सेठानी रानी बनन, बोली चख करि लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग, जनु विधु मंडल ड़ोल।।
फटिक सिला बैठे दोऊ भाई।
अतर गुलाल अबीर लगाई।।
चले कबीर पढ़त इतराई।
जहँ तहँ निरखत लोग लुगाई।।
बिन होली सुनु राखि खगेसा।
मिटहि न जीवन केर कलेसा।।
बनै न बरनत नगर निकाई।
है अबीर चारिहुँ दिसि छाई।।
धनिक बनिक वर धनद सामना।
बैठे सकल उड़ावै ताना।।
चौहट सुन्दर गली सुहाई।
गावत जहँ तहँ लोग लुगाई।।
तेहि अवसर आये दोउ भाई।
साथ लिए अपनी भौजाई।।
विश्वमित्र निकट बैठाये।
ध्रुपद धमार ख्याल बहु गाये।।
जो राउर अनुसासन पाऊँ।
नाचूँ कूदूँ मौज उड़ाऊ।।
कहहु सखी अस को पनधारी।
होली जाकौ लगत न प्यारी।।
होली खेलहु अति हरखाई।
वृथा मरहु जनि गाल बजाई।।
सब मंचनि ते मंच इक, सुंदर विसद बिसाल।
पिचकारी अरु रंग लै, बैठे तहाँ भुआल।।
राजकुँवर तेहि अवसर आये।
लडक़न सब स्वागत को धाये।।
पुनि पूरब दिसि गे दोउ भाई।
लरिकन ने तहँ धूम मचाई।।

जहँ बैठी देखहिं पुर नारी।
मारत दौड़ि तुरत पिचकारी।।
देखी जनक भीर यह भारी।
लागे देन सबन कौ गारी।।
लखन कहा हँसि हमरे जाना।
पुरुष नारि सब एक सामना।।
छरे छबीले छैल सब,
सूर सुजान प्रवीन।
मदमाते गाते चले,
चुन चुन गीत नवीन।।
जो परलोक यहाँ सुख चहहू।
छानहु भंग मस्त नित रहहू।।
सबहि विचार कीन्ह मनमाहीं।
बिना भाँग भलमनसी नाहीं।।
सुंदर सुखद सकल गुनरासी।
पीबहुँ भंग घोट के खासी।।
करहु जाय जा कहँ जोई भावा।
खान पान अरु सोर सराबा।।
भाँग छान औ धूर उड़ाई।
भाईन सहित चले रघुराई।।
रामहिं निरख ग्राम नरनारी।
डारत रंग बजावत तारी।।
मंगलमय निज निज भवन,
लोचन रचे बनाइ।
मुजरा नाच करावहीं,
वेस्यन को बुलवाइ।।
मदिरा ढालत बीतौ राता।
चलहिं न चरन सिथिल सब गाता।।
दादा पोता नाती नाना।
मुदित करहिं कल मंगल गाना।।
जाहिं बगीचे मिलि सब भामिनि।
सुख से बीतति सारी जामिनि।।
कोकिन पान तमाखू खाये।
श्रग सुगन्ध भूषित छवि छाये।।
रघुकुल रीत सदा चलि आई।
दिन दिन दूनों टिकस लगाई।।
पुत्रवती जुवती जग सोई।
गौर भक्त जाको सुत होई।।
नाम बड़ौ अरु कर्ज सदाहीं।
प्रभु प्रताप कछु दुर्लभ नाहीं।।
अस विचार जे परम सयाने।
चंदा देत सदा मनमाने।।
रघुबंसिन में जहँ कोउ होई।
पहिले चंदा देवे सोई।।
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं।
लड़त मुकदमा कोरट माहीं।।
नाथ बडन कर सहज सुभाऊ।
सबसों लेत देत ना काऊ।।
जो नहि पूजौ हाकिम गोरा।
भ्रष्ट होइ स्मुति मारग मोरा।।
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा।
बिन खिताब यह व्यर्थ शरीरा।।
हैं खिताब बिनु जे नर नारी।
तिन्हैं बिलोकत पातक भारी।।
सुनि लछमन बिहँसे बहुरि,
नैन तरेरे राम।
राय बहादुर होन हित,
लागे खरचन दाम।।
(सं0 1960)

मेरी मूछें कितनी प्यारी।

– **अनिरुद्ध कुमार (गोपाल),**
लखनऊ

तरह तरह के नाम हैं इनके,
तरह तरह के काम हैं इनके,
होतीं श्वेत वर्ण और काली,
रंग बिरंगी और मतवाली,
मेरी मूछें कितनी प्यारी।
जब निकले तो रेख कहावे,
बढ़ करके वो मूंछ कहावे,
गाल चढ़ी गलमुच्छ कहावे,
बड़ी मूँछ की शान निराली,
मेरी मूँछें कितनी प्यारी।
एक बार यात्रा मे मेरे,
राजस्थानी दम्पति थे बैठे,
जयपुर एक व्यक्ति पधारे,
लम्बे तगड़े औ साफा बांधे,
उनकी मूँछें इतनी लम्बी,
नाच झूम गालों को छूंती,
महिला ने झट घूंघट काढ़ा,
सकते में पति तब आया,
पूछा घूंघट अब क्यूँ काढा,
देखो उधर मर्द इक आया,
मूंछ को आदर देतीं हैं नारी,
मेरी मूंछें कितनी प्यारी।
जब पानी पीते हम गर्मी में,
बूंदे लिपट जाती हैं इनमें,
ओठों को ठंडक पहुंचातीं,
लू की गर्म हवा की मारी,
मेरी मूंछें कितनी प्यारी।
जाड़ों में लिहाफ बन जातीं,
मौंह को छप्पर ये कहलातीं,
खीर झोर के स्वाद बढातीं,
खाटू श्याम कों बडी पिआरी।
मेरी मूँछें कितनी प्यारी
जब मूंछों पर हम ताव लगाते,
अच्छों अच्छों के दिल घबराते,
घर में बच्चे, बूढ़े डर जाते,
पत्नी कहती गयि मति मारी,
मेरी मूंछें कितनी प्यारी।
कभी न इन पर ताव लगाना,
पत्नी आगे जब तुम जाना,
प्रभु का एक वरदान है एसा,
कि पत्नी आगे यह झुकती है
फिर भी मूंछें मर्दों को प्यारी,
मेरी मूछें कितनी प्यारी।

भक्त और भक्ति

- संजय मिश्रा, कानपुर

वृंदावन में एक भक्त रहते थे जो स्वभाव से बहुत ही भोले थे। उनमे छल, कपट, चालाकी बिलकुल नहीं थी। बचपन से ही वे "श्री वृंदावन" में रहते थे,

श्री कृष्ण स्वरुप में उनकी अनन्य निष्ठा थी और वे भगवान को अपना सखा मानते थे। बहुत शुद्ध आत्मा वाले थे, जो मन में आता है, वही भगवान से बोल देते है।

वो भक्त कभी "वृंदावन" से बाहर गए नहीं थे। एक दिन भोले भक्त जी को कुछ लोग "श्री जगन्नाथ पुरी" में भगवान के दर्शन करने ले गए। पुराने दिनों में बहुत भीड़ नहीं होती थी। अतः वे सब लोग श्री जगन्नाथ भगवान के बहुत पास दर्शन करने गए।

भोले भक्त जी ने श्री जगन्नाथजी का स्वरुप कभी देखा नहीं था उसे अटपटा लगा।

उसने पूछा – ये कौन से भगवान है ?

ऐसे डरावने क्यों लग रहे है ?

सब पण्डा पूजारी लोग कहने लगे – ये भगवान श्री कृष्ण ही है, प्रेम भाव में इनकी ऐसी दशा हो गयी है

जैसे ही उसने सुना – वो जोर जोर से रोने लग गया और ऊपर जहां भगवान विराजमान हैं वहाँ जाकर चढ़ गया। सब पण्डा पुजारी देखकर भागे और उससे कहने लगे कि नीचे उतरो परंतु वह नीचे नहीं उतरा उसने भगवान को आलिंगन देकर कहा –

"अरे कन्हैया ! ये क्या हालात बना रखी है तूने ? ये चेहरा कैसे फूल गया है तेरा , तेरे पेट की क्या हालत हो गयी है। यहां तेरे खाने पीने का ध्यान नहीं रखा जाता क्या ? मैं प्रार्थना करता हूं, तू मेरे साथ अपने ब्रज में वापस चल। मै दूध, दही , माखन खिलाकर तुझे बढ़िया पहले जैसा बना दूंगा , सब ठीक हो जायेगा तू चल। पण्डा पुजारी उन भक्त जी को नीचे उतारने का प्रयास करने लगे , कुछ तो नीचे से पीटने भी लगे परंतु वह रो – रो कर बार – बार यही कह रहा था कि कन्हैया , तू मेरे साथ ब्रज में चल, मै तेरा अच्छी तरह ख्याल करूँगा। तेरी ऐसी हालत मुझसे देखी नहीं जा रही।

अब वहाँ हड़बड़ मच गयी तो भगवान ने अपने माधुर्य श्रीकृष्ण रूप के उसे दर्शन करवाये और कहा – भक्तों के प्रेम में बंध कर मैंने कई अलग–अलग रूप धारण किये हैं, तुम चिंता मत करो। जो जिस रूप में मुझे प्रेम करता है मेरा दर्शन उसे उसी रूप में होता है, मै तो सर्वत्र विराजमान हूँ।

उसे श्री जगन्नाथजी ने समझा बुझाकर वरदान दिया और आशीर्वाद देकर वृंदावन वापस भेज दिया। इस लीला से स्पष्ट है कि जिसमे छल कपट नहीं है।

जो शुद्ध हृदय वाला भोला भक्त है,

उसे *भगवान सहज मिल जाते है...

(1) भक्त देखने में अकेला दिखता है पर त्रिलोकी के स्वामी प्रभु सदैव उसके साथ रहते हैं।

(2) भक्त जितना अपनी भक्ति को सबके साथ बाँटता है उतना उसकी स्वयं की भक्ति पुष्ट होती चली जाती है।

(3) जब भक्त अपनी चिंता नहीं करता तो प्रभु स्वयं उसकी चिंता करने लगते हैं।

रंगों का सर्वहारा त्यौहार- होली

– कैलाश चतुर्वेदी, कासगंज

अनुराग के रंग रंगी रसना, बसना कछु है गुन गायौ करै।
नित मंगल मोद मनायौ करै, रस– सिंन्धु में डूबि अन्हायौ करै।।

फागुन भारतीयों की ऐंद्रिय कलात्मकता का श्रेष्ठतम मास और मनुष्य की रसवंती कल्पनाशीलता का आमंत्रण है तेा होली

भारत के सांस्कृतिक राष्ट्र– भाव की उल्लास– धर्मा अभिव्यक्ति। क्योंकि यह लोकपर्व सुप्त जीवन के जागरण का पर्व,चेतनाओंको शक्ति देने का प्रतीक तथा ज्ञान की प्रकाश धारा है। प्रकृति नित्य नूतन, सदाबहार, चिरंतन और आनंदरस से परिपूर्ण है,

इसके अदंर रूप रस गंध का महास्त्रोत है। भारतीय चिंतन में इसी स्त्रोत का नाम उत्स है। उत्सव इसी आनंद रस का आपूरणहै। होली बसंतोत्सवों का चरम है। महा कवियों ने महोत्सवों में जिन उत्सवों की चर्चा की है वे मुख्यत: छह है–

''नवान्नेष्टि, आशोकान्तसिका, पुष्प प्रचायिका, बसंतोत्सव, होलिकोत्सव और उदक– क्ष्वेड़िका।'' होली–; ह ओ ल ई द्ध में ई– ईश्वर है शक्ति बीज है– '' विष्णू: प्रपज्जवीजं च माया ईकार उच्यते'' जो प्रत्येक जीव के हृदय में स्थित होकर जीव को निर्देश

देती है। भगवान ने गीता में कहा है– '' ईश्वर: सर्वभूतानांहृद्देशेऽर्जुन तिष्ठित– भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।'' इस तरह हम पाते है कि ईश्वर तत्व के साथ हमारा सम्बंध करा देना ही ''होली'' है। धर्मशास्त्रों के अनुसार होली पर अग्नि के देवरूप के पूजन का विधान है। पुराणों में कहा गया है कि पृथ्वी में दावानल,जल में बड़्वानल, तेज में प्रभानल, वायु में प्राणापालन और आकाश में विद्युतानल अग्नि ही है। हमारे शरीर में वैश्वानर रूप सेअग्नि व्याप्त है।)ग्वेद के प्रथम मन्त्र–'' ओम अग्निमी डे पुरोहितं यज्ञस्य, देव मृत्विजं, होतारं रत्न धातमम्।।'' अग्नि देव को नमन करते हुए समस्त अभीष्ट और समस्त कामनाओं को पूर्ण करनें की प्रार्थना की गई है। होलिका दहन पर अग्निदेव की

शीतलता एवं स्वयं की रक्षा के लिए पूजा मंत्र–''अहंकूटा भयत्रस्ते कृत्यात्यं होलि वालिशै, अतस्त्वां पूजायिष्यामि भूतप्रदयिनीमा।'' पौराणिक होली में हिरण्यकसिप्, होलिका तथा प्रहलाद का चित्रण है। भगवान ने गीता में कहा है दैत्यों में मैं भक्तराज

प्रहलाद हूँ– '' प्रहलादश्चास्मि दैत्यानं काल: कलयतामहम्।'' वेदों में हिरण्य को तो सब का स्वामी ब्रहम कहा गया है।

'' हिरण्यगर्भ: समवर्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत्।'' ब्रहम का रिपु– शत्रु अज्ञान है जो प्रहलाद को मारने का प्रयास

करता है कभी हाथी से बांध कर और कभी पहाड से गिरा कर। फिर अपनी बहन सहोदरा कुमति से कहा गया कि तुम अपनी गोद में लेकर जला दो, होलिका स्वयं जल गई। अंत में खम्भे से बांध कर मारने का प्रयास किया गया, खम्भे से ब्रह्य नें प्रकट होकर अज्ञान रूपी तत्व को अपने में मिला लिया और ज्ञान की प्रकाशधारा बह उठी।

परम को भी प्रिय है होली का उत्सव। रास रंग, भंग– तरंग, हर पुराण में एवं हर युग की होली में कुछबात तो है–

जिसे भगवान राम, शिव, कृष्ण और सभी देवताओं ने भी खेला। भगवान राधा कृष्ण की बरसाने की होली तो जगप्रसिद्व है–

''उड़त गुलाल लाल भए बादर,केसर रंग में बोरी रे रसिया,आज बिरज में होली रे रसिया,बरजोरी रे रसिया।'' भगवान राम नेभी अयोध्या में मॉ सीता संग खूब फाग खेला– '' खेलत रघुपति होरी हो, संगे जनक किशोरी.....।'' हिन्दी साहित्य और ब्रज

संस्कृति में तो होली की बहुत प्राचीन, समृद्व एवं सुदीर्घ परंपरा रही है। गौरव की बात है कि चतुर्वेदी बांधवों ने अपने ध्रुपद–

धमार, रसिया आदि रागों से इस परंपरा को बनाए रख कर मन को मंत्रमुग्ध किया है। आज ध्रुपद और धमार पर चतुर्वेदियों

का एकाधिकार सा है। भारतेन्दु, निराला, पंत से लेकर हरिवंश राय बच्चन तक सभी ने होली रचनाओं की अनुपम छटा बिखेरीहै। अल्मोड़ा के कवि सुमित्रानंदन पंत की पंक्तियां देखिये– '' आज रंगो फिर जन– जन का मन, रंगो पुन: भारत का यौवना।''

होली भारत का मधुरस, मधुछंद, सामगांन और लोकनृत्य है। प्रकृति का यह मधु प्रसाद अखंडहै, होली ऐसा ही

मधुकोष लेकर हर साल आता है। रंगो का सर्वहारा त्यौहार जब अपनी उन्मुक्त खुशियों से मन को प्रफुल्लित कर वातावरण

को रंगमय बना रहा है– आइये प्रेम और सदभाव का गुलाल लगा कर मनाऐं होली। होली के खुशनुमा रंग हम सबको सत्कर्मो के लिए स्फूर्ति प्रदान करें। इसी प्रार्थना के साथ –

''इन्द्रधनुष मन में, रहे जीवन में त्यौहार।
सॉसों में सजती रहे होली बारम्बार।।''

!! इति शुभम्!!

भारत के महान संत - श्री राम कृष्ण परमहंस

- मनोज चतुर्वेदी, लखनऊ

बंगाल में बहुत से महान संत हुए हैं जिनमे श्री चैतन्य महाप्रभु और श्री राम कृष्ण परमहंसजी मुख्य हैं। श्री रामकृष्ण परमहंसजी का जन्म १७ फरवरी १८३६ को में बंगाल के एक गांव कमारपुकुर में हुआ। बचपन में आपका नाम गदाधर था और लोग उन्हें गदाई के नाम से पुकारते थे। गदाई का पढ़ने लिखने में मन नहीं लगता था और ज्यादातर समय वे भगवान की मूर्तियां बनाने में बिताते थे। एकबार गदाई खेत में जा रहे थे और उन्होंने ऊपर आसमान में सफेद सारस उड़ते देखे। देखते देखते गदाई बेहोश हो गए और गिर पड़े। थोड़ी देर बाद जब गांव के लोग वहां से निकले तो उन्होंने गदाई को बेहोश पाया। जब गदाई को होश आया तो उन्होंने बताया कि उन्होंने कुछ सारस उड़ते हुए देखे और उन्हें ऐसा लगा कि वे शरीर में नहीं है। वे बहुत दूर कहीं बहुत आनंद में हैं। गदाई के बड़े भाई रामकुमार ,गदाई की पढ़ाई के लिए बहुत चिंतित रहते थे। वे अपने साथ गदाई को पढ़ाई के लिए कलकत्ता ले आए लेकिन गदाई का मन पढ़ाई में नहीं लगा। रामकुमार को कलकत्ता के दक्षिणेश्वर में स्थित काली मंदिर में पुजारी का काम मिल गया और दोनों भाई वहीं रहने लगे। कलकत्ता का ये प्रसिद्ध मंदिर एक धार्मिक और धनवान महिला रानी रासमति और उनके दामाद मथुरादास विश्वास(मथुर बाबू) ने बनवाया था। मथुर बाबू को गदाई एक विलक्षण युवक लगे और शायद मथुर बाबू ने हो गदाई को उनके ईश्वर प्रेम के कारण, रामकृष्ण का नाम दिया। रामकुमार की असामयिक मृत्यु से गदाई को बहुत आघात पहुंचा और उन्होंने खाना पीना छोड़ दिया और अपने आप को मां काली की आराधना में डुबा दिया। वे बार बार मां काली से प्रार्थना करते मां मुझे दर्शन दो, दर्शन दो। एक दिन मां काली के दर्शन न कर पाने की निराशा में उन्होंने पास में रखा फरसा उठा लिया और मां काली की मूर्ति से बोले मां आपके दर्शन के बिना जीवन व्यर्थ है और अपनी गर्दन काटने को तैयार हो गए, तभी मंदिर, दीवारें सभी गायब हो गईं और प्रकाश की किरणों ने श्रीरामकृष्ण को घेर लिया और वे बेसुध हो कर गिर पड़े। जब गदाई को होश आया तो वे पूरी तरह से बदल चुके थे। अब उनके लिए मां काली की मूर्ति, अब सजीव मां थीं। वे माता काली के सजीव रूप से घंटों बात किया करते रहते थे। इसी बीच श्री रामकृष्ण जी का विवाह ५ वर्षीय शरदामणि से हुआ। जब सारदा मणि १७ वर्ष की हुईं तो दक्षिणेश्वर अपने पति श्री रामकृष्ण के पास आगईं। श्री रामकृष्णजी अब मां काली की भक्ति में ही लीन रहते थे और सांसारिक संबंधों से ऊपर उठ चुके थे। एक दिन सारदामणि ने श्री रामकृष्ण जी से पूछा आप मुझे किस दृष्टि से देखते है तो श्री रामकृष्ण जी ने कहा जो मेरी मां उस मंदिर में है वही मां जिसने मुझे जन्म दिया है, वही मां मेरी सेवा कर रही है। मैं तुम्हें अपनी मां के स्वरूप में देखता हूं। सारदामणि भी बहुत उच्च अध्यात्मिक महिला थीं और बाद में मा सारदा के नाम से जानी गईं। श्री राम कृष्ण को दक्षिणेश्वर के मंदिर में २ संत मिले, एक भैरवी सन्यासिन और दूसरे श्री राम कृष्ण के गुरु श्री तोतापुरी। श्री तोतापुरी ने ही श्री रामकृष्ण को परमहंस की उपाधि दी। श्री राम कृष्ण परमहंस को उनके शिष्य ठाकुर कहते थे। श्री रामकृष्ण परमहंस जी ने इस्लाम, ईसाई और अन्य धर्मों का अध्यन किया और पाया सभी धर्म अंत में एक ईश्वर तक जाते हैं। उनके अनुसार ईश्वर को पाना ही सबसे महत्वपूर्ण है, किस मार्ग से ईश्वर तक पहुंचना है वह महत्वपूर्ण नहीं। श्री रामकृष्ण परमहंसजी लोगों को यही कहते थे, ईश्वर से प्रेम करो। एक बार उनके किसी भक्त ने पूछा, ईश्वर साकार हैं या निराकार। श्री रामकृष्ण परमहंसजी ने उस भक्त से पूछा, तुम्हें ईश्वर का कौन सा स्वरूप पसंद है, तो भक्त बोला, साकार। ठाकुर बोले तो तुम साकार रूप में पूजा करो, जिसे निराकार रूप पसंद है वह निराकार रूप की पूजा करे। पूजा तो उसी एक ईश्वर की है। अपने जीवन के अंतिम समय में ठाकुर को गले का कैंसर होगया था और उनको खाने,पीने और बोलने में बहुत कष्ट होने लगा। एक दिन उनके शिष्यों ने बहुत आग्रह किया कि ठाकुर, मां काली से अपने लिए प्रार्थना करें। ठाकुर ने मना कर दिया लेकिन अपने शिष्यों के आग्रह के कारण मां के पास गए और बोले मां मुझे खाने में बहुत कष्ट है। ठाकुर रोते हुए बाहर आए।

शिष्यों ने उत्सुकता में पूछा, मां ने क्या कहा। ठाकुर बोले मां ने डांट दिया और कहा ये जो तू लाखों लोगों के मुंह से खा रहा है। मैं मां से और कुछ नहीं कह पाया। सभी मनुष्यों को चाहे वे साधारण मनुष्य हों या संत, शरीर से जुड़े धर्म को निभाना ही पड़ता है। अपनी मृत्यु के कुछ दिन पहले ठाकुर ने अपनी सारी अध्यात्मिक शक्तियां अपने सबसे प्रिय शिष्य नरेन(स्वामी विवेकांनद जी) को दे दीं। १५ अगस्त १८८६ को ठाकुर ने कलकत्ता में अपने नश्वर शरीर को त्याग दिया और ईश्वर में विलीन हो गए। श्री रामकृष्ण परमहंस जी का एक ही संदेश सभी के लिए था ईश्वर से जितना प्रेम कर सकते हो, करो। ईश्वर को प्रेम से ही पाया जासकता है। भारत के ऐसे सरल और महान संत को हम सबका हृदय से प्रेम।

शाखा समाचार

लखनऊ

रविवार 30 जनवरी 22 को लखनऊ चौक स्टेडियम में लखनऊ मंडल के खेल कूद का आयोजन किया गया। महिलाएं और बच्चे विशेष उत्साहित थे स्पोर्ट्स डे पर। इस नवगठित कार्यकारिणी का यह पहला कार्यक्रम था। स्टेडियम पहुँचने पर नाश्ते में कचौड़ी, सब्जी और चाय का प्रबंध था। जिसका सभी बांधवों ने आनंद लिया। उसके बाद क्रिकेट मैच का आयोजन था। ये मैच हर्ष एकादश और गौरव एकादश के मध्य हुआ। जिसे हर्ष एकादश ने अपने अच्छे खेल की बदौलत आराम से जीता। हर्ष एकादश की ओर से कप्तान हर्ष ने 75 रन की नाबाद पारी खेली , संस्कार ने भी 51 रन बना कर उनका अच्छा साथ दिया। गौरव एकादश की ओर से आर्यन 70 रन टॉप स्कोरर रहे। कप्तान गौरव ने भी नाबाद 23 रन का योगदान दिया। मैच के दौरान सुबोध जी, गौरव जी मैच का आंखों देखा हाल सुनाते रहे। हर्ष को उनकी 75 रन की पारी के लिए मैन ऑफ द मैच चुना गया। आर्यन को बेस्ट बैट्समैन और हर्ष जी (जेल रोड) को बेस्ट बॉलर का खिताब मिला। क्रिकेट मैच के सभी प्लेयर्स को एक कंपनी की तरफ से गिफ्ट हेमपर्स प्रदान किये। जिसके लिए खेल मंत्री स्वर्णेष जी के प्रयासों को साधुवाद दिया गया। तब तक लंच की घोषणा हो गई सभी ने सुस्वादिस्ट भोजन का आनंद लिया। फिर लंच के बाद शुरू हुए महिलाओं और बच्चों के लिए विभिन्न खेल जिनमें विभिन्न प्रकार की दौड़, नींबू दौड़, म्यूजिकल चेयर, जेवलिन थ्रो, शॉट पुट, डिस्कस थ्रो, रस्सी कूद इत्यादि शामिल थे। सभी प्रतिभागियों का उत्साह देखते ही बनता था। साथ ही बाहर बैठे बांधवों की तालियों की गड़गड़ाहट ने भी सभी प्रतिभागियों के उत्साहवर्धन किया। इन सब खेलों के बीच एक कोने में एक लोकप्रिय खेल ताश का भी चल रहा था और इसको खेलने वाले अपनी ही दुनिया मे मगन थे। सभी खेलो को आयोजित करवाने में सहायता के लिए शिशिर जी, स्वर्णेश जी, आनंद जी, यदुवेश जी, प्रफुल्ल जी, जलज जी , गौरव जी, संस्कारजी, हर्ष जी, पुत्तन जी, पूनम जी, नीलम जी, अमिता जी आदि मुस्तैदी से मैदान में डटे रहे। खेलों के समापन के पश्चात क्रिकेट के विजेताओं को सभी संरक्षकों द्वारा ट्राफियों का वितरण किया गया। अन्य खेलों के विजेताओं को होली मिलन के दिन वार्षिक उत्सव में पुरस्कृत कर सम्मान करने की घोषणा की गई।

इसके बाद मंगलाचरण से लखनऊ मंडल की आम सभा का आयोजन शुरू हुआ। अध्यक्ष विपिन जी के घायल होने के कारण अनुपस्थिति होने पर उपाध्यक्ष पंकज जी एवं प्रदीप जी ने बैठक का संचालन किया। जिसमें मंत्री श्री शिशिर जी ने भविष्य की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी। मंडल के रजिस्ट्रेशन के नवीनीकरण के संबंध में पूँछे गए प्रश्न पर शिशिर जी ने कहा पैसा जमा हो चुका है, किन्तु कोरोना काल के चलते सर्टिफिकेट नही प्राप्त हो पाया। इसके लिए प्रयास कर सर्टिफिकेट शीघ्र ही प्राप्त कर लिया जाएगा। मंत्री जी ने बताया कि होली मिलन 27 मार्च को रविंद्रालय में होना निश्चित हुआ है। बैलेंस शीट पर प्रफुल्ल जी द्वारा शुरू की गई चर्चा को दिवाकर जी (चौक) ने समय का हवाला देते हुए कहा कि अब इस पर चर्चा करने में समय नष्ट न करें तो अच्छा होगा। इस पर मिंटू जी ने सुझाव दिया कि सभा को सिर्फ बैलेंस ही बता दिया जाए। इस पर उपाध्यक्ष पंकज जी ने यथोचित जबाब देते हुए सदन को बैलेंस शीट के क्लोजिंग बैलेंस एवं वर्तमान बैलेंस की जानकारी दी। इसके बाद ललित जी ने मंडल के आकस्मिक चिकित्सा कोष के बारे में जानकारी दी। साथ ही कॉर्डिनेटर यदुवेश मिंटू ने भी इसके कुछ बिंदुओं पर प्रकाश डाला। ललित जी ने बताया कि इसका एक अलग से बैंक एकाउंट खुल चुका है। श्री दीपक जी ने उसी समय 5100/- रुपये का चेक देकर, साथ ही पंकज़ जी मोतीनगर ने भी 5000/- रुपये का योगदान मेडिकल कोष में दिया। दिवस जी ने खेलकूद में सर्वोच्च खिलाड़ी के लिए अपने पिता स्व. यतीश जी की स्मृति में 2100/- रुपये का पुरस्कार मंडल को दिया। कार्यक्रम में मण्डल के संरक्षक महेश जी,शैल जी, दीपक जी, दिलीप जी, उमाकांत जी, नवीन जी, सरोज जी,मुन्नी जी, कमलेश जी,उदिता जी, अमिता जी आदि के साथ ही पुरुषों, महिलाओं एवं बच्चों की भागीदारी उल्लेखनीय रही। चाय का आनंद और कुछ गपशप के बाद फिर शीघ्र ही सबसे मिलने की आशा के साथ एक शानदार दिन समाप्त हुआ। अंत मे सदन ने तालियां की गड़गड़ाहट के साथ मण्डल के पदाधिकारियों एवं सभी आयोजको का खेल कूद एवं मीटिंग के लिए उचित प्रबंध एवं स्वादिष्ट खानपान व्यवस्था हेतु आभार प्रकट किया। सभी ने एक सुर से कहा कि कार्यक्रम में अध्यक्ष जी श्री विपिन जी की कमी काफी खली। ज्ञात रहे कुछ दिनों पूर्व एक दुर्घटना में अध्यक्ष विपिन जी घायल हो गए थे। सभी ने उनके शीघ्र स्वस्थ होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

- शिशिर चतुर्वेदी, मंत्री
संजय, सहमंत्री

समाज समाचार

- श्रीमती शांति चतुर्वेदी पत्नी श्री भरत चंद चतुर्वेदी (इटावा/दिल्ली) का स्वर्गवास दिनांक 17 जनवरी 2022 को दिल्ली में हो गया। उनकी स्मृति में उनके पुत्र श्री आशीष चतुर्वेदी (दुबई) ने अन्नपूर्णा सहायतार्थ 12000/- प्रदान किए।

(र.क्र.- 888)

- अक्षत चतुर्वेदी पुत्र श्री धर्मेश चतुर्वेदी (मैनपुरी/गाज़ियाबाद) का चयन गूगल में एल-4 पोजीशन पर डेटा साइन्टिस्ट के रूप पर में हो गया है। वे वॉरसॉ (पोलैंड) में जॉइन करेंगे। बधाई।

- श्री मनोज-नीता चतुर्वेदी (आगरा/सागर) ने अपने पिता स्व. श्री प्रह्लाद नारायण चतुर्वेदी जी की दिनाँक 08-1-2022 को 39वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में श्रद्धान्जली अर्पित करते हुए माताजी श्रीमती शकुन्तला चतुर्वेदी नें महासभा के अन्नपूर्णा कोष में 1500/- रूपये भेंट किये। (र.क्र. - 874)

- कु. खुशी चतुर्वेदी पुत्री श्री मनोज/ नीता चतुर्वेदी (आगरा/सागर) के द्वारा अपनी पुत्री की 19वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में अन्नपूर्णा कोष में 1000/-रूपये भेंट किये। (र.क्र. - 875)

- श्री अशोक चौबे (नागपुर/फरौली) ने अपनी पुत्री आकांक्षा का विवाह चि. दीपित के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपने 250/- महासभा सहायतार्थ रुपये व 251/- रुपये पत्रिका सहायतार्थ प्रदान किये। बधाई। (र.क्र. - 896)

- कु. प्रिया चतुर्वेदी पुत्री श्री एम.एल. चतुर्वेदी (तरसोखर/ग्वालियर) के चार्टर्ड अकाउंटेंट बनने पर बधाई।

संपादक के नाम पत्र

अभिवादन, महासभा की इस टीम के प्रयासों से महासभा ने ग्लोबल स्वरूप प्राप्त किया है तदर्थ अनेकानेक बधाइयाँ शुभकामनाएं। अभयराज जी का चतुर्वेदी चंद्रिका के दिसम्बर अंक में कलेण्डर को स्थान देने का सुझाव प्रशंसनीय है जो इसे व्यापक स्वरूप देगा। सोइ धन धन्य प्रथम गति जाकी महिला मंडल व हैदराबाद शाखा सभा द्वारा नव वर्ष 2022 एवं मकर संक्रांति के पावन पर्व पर अन्नपूर्णा सहायता का प्रयास अभिनंदनीय भी अनुकरणीय भी। इस तरह के सेवा भावी भाव सदैव ही कल्याणकारी होते हैं तथा महासभा द्वारा हर संभव प्लेटफार्म पर उत्साहवर्धन व प्रोत्साहन वंदनीय है अध्यक्ष जी के द्वारा "मन की बात" में इस विषय को उल्लेखित करना प्रशंसनीय है। (इस कटिंग को हैदराबाद ग्रुप पर पोस्ट किया गया) एवं शाखा समाचार के अंतर्गत विस्तृत विवरण देने के लिए महासभा के हर पदाधिकारी का व शशांक जी का आभार

- बीना मिश्रा

पुस्तक समीक्षा : अक्सर

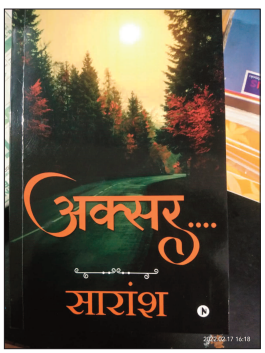

अक्सर जो लोग साथ होते हैं, उनके जीवन के किस्से भी लगभग एक जैसे होते हैं। आज से करीब 10 वर्ष पूर्व सौरभ जी,सारांश ने जो काव्य यात्रा अकेले शुरू की थी। अपनी भावनाओं को एक काव्य का रूप देने के उस सफर में वक्त के साथ हर एक मोड़ पर अनेक लोग जुड़ते चले गए और कारवां बढ़ता चला गया। अक्सर - एक प्रयास है उन उलझनों, उन भावनाओं को शब्द देने का जो कही अनकही सुलझाने में हमारी सारी जिंदगी निकल जाती है।

कभी कुछ जोड़कर या कुछ घटा कर के कभी,
कुछ ख्वाहिशें रोज हिसाबों में मिला करती हैं।
कुछ पुराना सा याद आ जाता है पढ़कर इसे,
जिंदगी अक्सर हमें किताबों में मिला करती है।

आपकी पहली पुस्तक चार कोस का चांद मई 2018 में आई थी। सौरभ जी,सारांश का लखनऊ में फाइनेंस का निजी कारोबार है। आज सौरभ जी के फेसबुक पर ढाई लाख फॉलोअर है। जिस तरह आपका उनकी पहली पुस्तक चार कोस का चाँद को देश का भरपूर आशीर्वाद मिला। उसी तरह उनकी दूसरी पुस्तक अक्सर को भी आप सभी का स्नेह प्राप्त होगा। यह पुस्तक अमेजॉन साइट पर उपलब्ध है। सौरभ जी,सारांश की कविताओं में भावनात्मक गहराई के साथ जीवन के प्रति एक गहरी सोच परिलक्षित होती है। आप मूलतः आगरा जिले के होलीपुरा ग्राम के प्रतिष्ठित पांडे परिवार के श्री ओमकार नाथ

जी चतुर्वेदी के सबसे छोटे चिरंजीव हैं।

- चि. हर्ष सुपुत्र श्री ह्रदय नाथ–श्रीमती रंजना चतुर्वेदी (फरौली/आगरा) का शुभ विवाह सौ. निपुर्णिका सुपुत्री श्रीमती अपर्णा–श्री संजय चतुर्वेदी (मथुरा,डोर वाले) के साथ दिनाँक 27.1.2022 को आगरा में संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री ह्रदय नाथ जी ने पत्रिका सहायतार्थ 1100/– प्रदान किए।

- चि. वत्सल सुपुत्र श्री चंचल चतुर्वेदी एवं चि. पार्थ सुपुत्र श्री मयंक चतुर्वेदी के उपनयन संस्कार के उपलक्ष्य में श्री मुरलीधर चतुर्वेदी (चंद्रपुर/मथुरा) ने महासभा को 251/–, चतुर्वेदी चंद्रिका को 251/– एवं अन्नपूर्णा योजना में 6000/– प्रदान किये ।। बधाई।।

- चि० ऐश्वर्य सुपुत्र श्री चंद्रकांत जी – प्रीति जी (सिकंदरपुर खास/लखनऊ) का शुभ विवाह आयु० सौम्या सुपुत्री श्री नवीन जी (आगरा/दिल्ली) के साथ दिनाँक 10/2/2022 को दिल्ली से सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में ताऊ जी सुबोध जी द्वारा महासभा रू० 501/ भेंट प्रदान की गई। बधाई

- स्व. अजीत कुमार चतुर्वेदी (हिंडौन/ दिल्ली) की चतुर्थ पुण्यतिथि के अवसर पर उनकी पत्नी श्रीमती शोभा चतुर्वेदी द्वारा 6000/– अन्नपूर्णा सहायतार्थ प्रदान किए।
(र.क्र.–910)

- सौ. राशी सुपुत्री श्रीमती गरिमा एवं श्री रितेश सुपौत्री श्रीमती दया एवं श्री महेचन्द्र जी (बिजकौली/दिल्ली) का शुभ विवाह चि. रित्विक सुपुत्र श्रीमती नूपूर एवं श्री संजीव, सुपौत्र स्व. श्रीमती पुष्पा एवं स्व. श्री दिनेश जी (बसुआ गोविन्दपुरा/जयपुर) के साथ दिनांक 20 फरवरी 2022 को जयपुर में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपने अन्नपूर्णा साहयतार्थ 12000/– रू. व महाविद्यादेवी मंदिर सहायतार्थ 1100/– रू. प्रदान किये। साथ ही नव दम्पत्ति को महासभा की आजीवन सदस्यता दिलाई। बधाई। (र.क्र.–916)

" MOTHER BIRD"

– व्योम चतुर्वेदी, इंदौर

तेरी कठिनाइयों ने मुझको इतना बड़ा बनाया,
मेरे हर वाजिब फ़ैसले को साहस से भरा दिया

तेरे विश्वास ने मेरे पँखो को मज़बूत बनाकर मुझे उड़ान भरना सिखाया
मेरी हर उलझन परेशानी में मैंने सदा तुझे साथ खड़ा पाया

तेरी कमी कभी पूरी नहीं हो सकती "माँ"
पर तू साथ होती, तो मेरी ये उड़ान और भी ख़ास होती, ये ज़िंदगी थोड़ी आसान होती

तुम्हारा मेरे पास आके बैठना आज भी बहुत याद आता है
तुमसे बेहतर मुझे कहाँ कोई भी समझ पाता है
मेरी कथनी और करनी को लोग समझते हैं पर अब भावनाओं तक कहाँ कोई जाता है

अक्सर रास्ता भटक जाता हूँ तो मार्गदर्शन तेरी यादों में पाता हूँ
तेरा मेरा रिश्ता तो शब्दों से परे है "माँ" और सच कहूँ तो रूपापात्र भी शायद इनसब से अंजान हैं

बस कुछ शब्दों को सहारा लेकर तुम्हें नमन करना चाहता हूँ
तू मेरी माँ है ये मेरा सौभाग्य है और तुझसे मेरा होना मेरे जीवन को वरदान है

मां

– मंजरी चतुर्वेदी "गुल" (इंदौर)

कहते हैं संसार में मां के समान कोई दूसरा व्यक्ति नहीं होता है।
लेकिन जब आप ऐक संयुक्त परिवार का हिस्सा होते है।
तब परिवार में और भी ऐसे लोग होते हैं।
जो आपके लिए मां पिता समान होते हैं।
आज अपने शब्दों के मध्यम से ऐसे ही एक माँ को सादर श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहती हूं।
चाची, आपको ब्रह्मलीन हुए पुरे चार वर्ष हो चुके लेकिन एक भी लम्हा ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि आप हमारे बीच नहीं है।
हर अच्छे और बुरे समय मे आपकी सलाह एक अद्भुत शक्ति की प्रेरणास्रोत थी आप सलाह और सीख की अनंत संपदा थी।
बघर परिवार के सदस्यो के बीच जो ताल मेल संजोय था वह हम सभी के लिए प्रेरणापद व अविस्मरणीय है। अपना आशीर्वाद हम सब पर सदा बनाए रखिएगा।

शोक समाचार

* श्रीमती मृदुला पत्नी स्वर्गीय भुवनेश जी (बटेश्वर/इटावा) का स्वर्गवास इटावा में दिनाँक 28/01/22 को इटावा में हो गया।

***

* श्रीमती सुनीता चतुर्वेदी पत्नी स्व. रामगोपाल चतुर्वेदी (फिरोजाबाद/जयपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 26.01.2022 को जयपुर में हो गया।

***

* श्रीमती मंजुला (चौबे जी साड़ी वाले परिवार, बनारस) कास्वर्गवास दिनाँक 26/01/22 को लगभग 90 वर्ष की आयु में फरीदाबाद में हो गया।

***

* श्री प्रभाकर चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्याम सुन्दर चतुर्वेदी (कायमगंज) का स्वर्गवास दिनाँक 24/01/22 को 76 वर्ष की आयु में हो गया।

***

* श्रीमति मधुलता चतुर्वेदी पत्नी श्री प्रकाश चन्द्र चतुर्वेदी (चन्द्रपुर) का स्वर्गवास पोर्टलैंड अमेरिका में दिनाँक 18.01.22 को हो गया।

***

* श्रीमती शांति चतुर्वेदी पत्नी श्री भरत चंद चतुर्वेदी (इटावा/दिल्ली) का स्वर्गवास दिनांक 17 जनवरी 2022 को दिल्ली में हो गया।

***

* श्री अश्विनी चतुर्वेदी (बब्लू) पुत्र स्व.सुरेन्द्र नाथ जी (चंद्रपुर/करांचीखाना कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 01/02/22 को हृदयाघात के कारण कानपुर में हो गया।

***

* श्री गिरीश चंद्र जी (जहाँगीरपुर/प्रयागराज) का स्वर्गवास दिनाँक 03/02/22 को हो गया।

***

* श्रीमती राधा चतुर्वेदी पत्नी स्वर्गीय श्री कौशल किशोर जी (जयपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 03/02/2022 को जयपुर में हो गया।

***

* श्री बंशीधर चतुर्वेदी,लाला (मैनपुरी / आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 6 फरवरी 2022 को आगरा में हो गया।

***

* श्री प्रवीण चंद्र चतुर्वेदी पुत्र श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (होलीपुरा/लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 08/02/2022 को लखनऊ में हो गया।

***

* श्री सुरेश चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री हरिनाथ चतुर्वेदी (जयपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 9/02/2022 को जयपुर में हो गया।

***

* श्रीमती चमेली देवी चतुर्वेदी पत्नी लक्ष्मीकांत चतुर्वेदी,राधेश्याम (झालरापाटन) का स्वर्गवास दिनाँक 9 फरवरी 2022 को झालरपाटन में हो गया।

--

* श्री संजीव कांत चतुर्वेदी (जसवंत नगर,इटावा/भोपाल) का स्वर्गवास दिनाँक 7 फरवरी2022 को भोपाल में हो गया।

***

* श्रीमति कुमोदनी चतुर्वेदी धर्मपत्नी स्व श्री उपेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/मैनपुरी/आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 12/02/22 को आगरा में हो गया।

***

* श्रीमती साधना चतुर्वेदी पत्नी श्री अजय चतुर्वेदी (कायमगंज) का स्वर्गवास दिनांक 12/02/2022 को गुड़गांव में हो गया।

***

* एयर कोमोडोर (अवकाश प्राप्त) अशोक कुमार चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. अविनाश चंद्र चतुर्वेदी (कछपुरा/ नोएडा) का स्वर्गवास नोएडा में दिनांक 17/01/2022 को हो गया।

***

* श्रीमति उमा मिश्रा पत्नी श्री भानू मिश्रा (इटावा/ कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 15.02.22 को कानपुर में होगया।

***

* श्रीमती निशी पत्नी श्री विष्णु कांत जी (चंद्रपुर/कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक दिनाँक 16/01/2022 को हो गया।

***

* श्री संदीप चतुर्वेदी पुत्र श्री निर्मल चंद्र चतुर्वेदी (जयपुर) का स्वर्गवास 55 वर्ष की आयु में दिनाँक 18/02/2022 को हो गया।

***

* श्री प्रकाश चंद्र चौबे (होलीपुरा/हरदा) का स्वर्गवास दिनाँक 17/02/2022को 84 वर्ष की आयु में हरदा में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

स्व. श्री देवेन्द्र नाथ चतुर्वेदी

पुत्र स्व. श्री लक्ष्मी चंद चतुर्वेदी एवं
स्व. श्रीमती मुन्नी देवी (होलीपुरा /कानपुर)

जन्म : 01-07-1938
निर्वाण : 19-12-2020

प्रथम पुण्यतिथि पर सादर नमन

हम आपको न भूल पायेंगे, आपकी बातें, आपकी सादगी, आपका मार्ग दर्शन हमें हमेशा प्रेरणा देता रहेगा।
भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

श्रद्धावनत

श्री यदुनंदन चतुर्वेदी (भाई) कानपुर
नीता - शिशिर मिश्र (पुत्री-दामाद) जालंधर
श्रीमती पुष्पा पत्नी स्व. श्री लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी (भाई)
श्रीमती नीरा पत्नी स्व. श्री किशोर चतुर्वेदी (भाई) लखनऊ
श्वेता- मनोज (भतीजी -दामाद), दोहा, (यूएई)
प्रत्यूष - कोमल (भतीजा -बहू), लखनऊ
प्रतीची -आशीष (भतीजी -दामाद), लखनऊ
प्रयास (भतीजा)
ऋषभ - श्रुति (नाती - बहू), नौएडा
अयान (प्रपौत्र) ऋषभ (पुत्र)
मेघना (नातिन)
राघव, पीहू, मालव्य, ध्रुव, आरव तथा वासु (नाती, नातिन)

पता : 2ए/178, आजाद नगर, कानपुर-208002
मो. : 7814686353, 8699015479, 9451446901

(र.क्र. 2022/808)

चतुर्थ पुण्य स्मृति श्रद्धांजलि

देश(बी.एस.एफ), समाज और परिवार के प्रति उनकी सेवा और उनका
सभी के प्रति प्रेम भाव उनके मित्र और सम्बंधी निरंतर याद रखेंगे।

जन्म
11 नवंबर 1943

स्वर्गवास
14 फरवरी 2018

स्वर्गीय अजीत कुमार चतुर्वेदी

सुपुत्र स्व. चंद्रभान चतुर्वेदी - स्व. चुन्नी देवी चतुर्वेदी
(हिंडौन, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली)

श्रद्धावनत

पत्नी	:	शोभा
बड़ी बहन - जीजाजी	:	उषा - नीलरत्न
छोटे भाई - वधु	:	कृष्ण मोहन - करूणा, कुशल कुमार - निधि
भतीजे - वधु	:	गौरव - रेणु, कुशाग्र - अंशुल, विशाल - अदिती
भतीजी - दामाद	:	शालिनी - शिशिर, सुमति - अनुराग, शुचि - गौरव, सुरभि
भांजे - वधु	:	तरूण - नेहा, नीरज - मेघा
पौत्र - पौत्री	:	मुस्कान, हर्ष, किशमिश, निमिष
धेवता - धेवती	:	रिमझिम, निष्ठा, सार्थक, नमन एवं रोनित एवं केया और गर्वित

पता : RZ-686/F-11, राजनगर पार्ट-1, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली - 110045
मो. : 9313598373, 9625721028

(र.क्र. 2022/910)

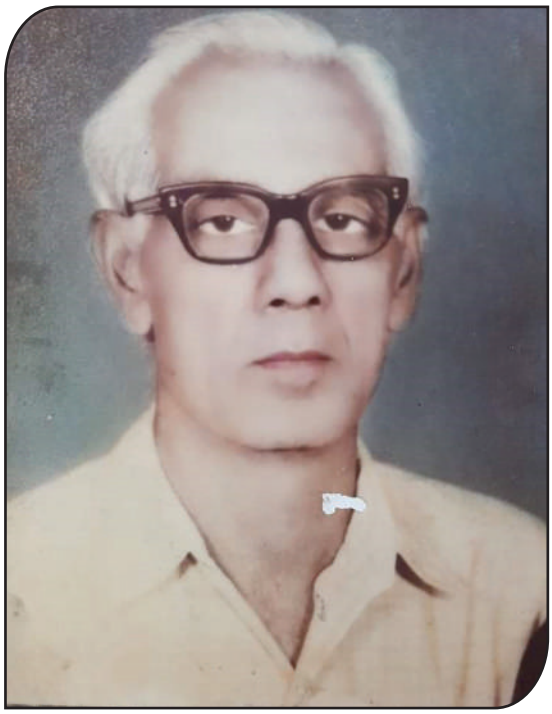

स्व. श्री रामगोपाल चतुर्वेदी

सुपुत्र : स्व. श्री बांकेलाल चतुर्वेदी - स्व. श्रीमति लक्ष्मी चतुर्वेदी
(फिरोजाबाद/जयपुर)

जन्म – रामनवमी 1922, वैकुंठगमन – 31 मार्च 1993 (रामनवमी)

100वें जन्मदिन

हमारे परम आदरणीय, परमपूज्य पिता स्व. श्री रामगोपाल चतुर्वेदी को 100वें जन्मदिन पर सादर नमन और भावपूर्ण श्रद्धांजलि, आपके जीवन आदर्श सदैव हम सभी का मार्गदर्शन करते रहेंगे और आपके आशीर्वाद की छत्रछाया में हमसब अपने को सुरक्षित महसूस करते रहेंगे।

श्रद्धावनत

सत्येन्द्र - नीरू, सुनील - प्रीति
संजय - छाया (पुत्र-पुत्रवधु), शलभ - किरण, सौरभ, संभव, शुभम (पौत्र), पायल, वागिशा, प्रांजलि (सुपौत्री), शौर्य, सिद्धार्थ (प्रपौत्र), एवं समस्त चतुर्वेदी परिवार।

निवास : 220, देवी नगर, न्यू सांगानेर रोड, मैट्रो पिलर नं. 79, सोडाला, जयपुर
मो. : 9166141754, 9772445529, 9014915743

श्रद्धांजलि

स्व. श्रीमती सुनीता चतुर्वेदी

(धर्मपत्नी स्व. श्री रामगोपाल चतुर्वेदी) (फिरोजाबाद)

जन्म – 20.05.1934, वैकुंठगमन – 26.01.2022

शत – शत नमन

(र.क्र. 2022/907)

पचासवीं पुण्यतिथि
श्रद्धेय वात्सल्यमयी बड़ी अम्मा
श्रीमती उदय कुँवर

1878 - 1972

सुपुत्री सर रघुनाथ दास
धर्मपत्नी श्री बनवारी लाल

मैनपुरी

श्रद्धांजलि व मधुर स्मृतियाँ

सतीश चन्द्र / चमेली देवी

"साकेत" परिवार (लखनऊ)

रमेश	राकेश	गणेश	कंचन
ऊषा	उर्मिला	सुनीला	स्व० गिरिजेश

एवं

समस्त परिवार

(र.क्र. 2022/906)

चतुर्थ पुण्य तिथि

जन्म
25.11.1960

निर्वाण
01.02.2018

स्व. श्रीमती साधना चतुर्वेदी
पत्नी : श्री अचलेश चंद्र चतुर्वेदी

मायका पक्ष	ससुराल पक्ष	नंद-नंदोई
पुत्री : स्व. गनपत देव चतुर्वेदी - स्व. सरोजिनी चतुर्वेदी भाई -भाभी : श्रीमती सरिता पत्नी - स्व. विनय चतुर्वेदी, श्रीमती अंजुली पत्नी - श्री अवधेश चतुर्वेदी, स्व. अजित चतुर्वेदी, भतीजे -भतीजी : अर्पण ;आकार आकृति, अदिति (निवासी- मईबटेश्वर, प्रवासी- इलाहाबाद	पुत्र वधू : स्व. सुरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी - स्व. उर्मिला चतुर्वेदी भाई -भाभी : श्रीमती बीना पत्नी - श्री मिथलेश चंद्र चतुर्वेदी, श्रीमती प्रेमलता पत्नी -श्री अखिलेश चंद्र चतुर्वेदी पुत्र- पुत्री : तृप्ति चतुर्वेदी, व्योम चतुर्वेदी भतीजे भतीजी : श्रीमती मंजरी पत्नी श्री अनुराग चतुर्वेदी, श्री राघव चतुर्वेदी (वधू श्रीमती प्राची चतुर्वेदी), वैभव चतुर्वेदी धेवता-धेवती : नमिशा, निहित (निवासी – मैनपुरी, प्रवासी- कानपुर)	स्व. शशि पत्नी स्व. शिव कुमार, श्रीमती ऊषा पत्नी स्व. राम किशन, श्रीमती गीता पत्नी श्रीधीरेन्द्र नाथ, श्रीमती विनीता पत्नी श्री गिरीश चंद्र, श्रीमती सुनीता पत्नी श्री शशि कांत

पता : 133/104, ओ ब्लांक एमजी कॉलोनी (केसा कैश ऑफिस के पास) किदवई नगर, कानपुर

(र.क्र.2022/913)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021–23
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' मार्च 2022

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

होली की हार्दिक शुभकामनायें

केसर कुमकुम कुसुम सजावत
ग्वाल पुकारत, होरी है होरी, जमुना तट।
खेलन आयो होरी बरजोरी,
अबीर गुलाल लिए झोरी, जमुना तट।
अबीर गुलाल मल्यो मुख मोरे,
पकरि बांह मोरी झकझोरी, जमुना तट।
दौड़ि दौड़ि पिचकारी चलावत,
कर दीनी मोहे सरबोरी, जमुना तट।

होली कि
मंगल बधाई

डॉ. सतीश चतुर्वेदी
पूर्व मंत्री, महाराष्ट्र शासन,
सौ. आभा चतुर्वेदी,
दुष्यंत चतुर्वेदी,
विधायक, महाराष्ट्र
शीतल चतुर्वेदी

(र.क्र. 2022/746) 5/12